A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 28 मई, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 258, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

ट्रंप के गोल्डन डोम से और असुरक्षित होगी दुनिया!

चंद्र भूषण

गोल्डन डोम रक्षा प्रणाली को लेकर वैश्विक चिंताएँ बढ़ रही हैं। क्या यह तकनीकी ढाल दुनिया को अधिक सुरक्षित बनाएगी या नए संघर्षों की भूमिका बनेगी? जानिए इसका भू-राजनीतिक असर।

अपने देश को किसी भी तरह के बाहरी हमले से सुरक्षित रखने का उपाय शुरू करने की बात अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपना यह कार्यकाल शुरू करने के साथ ही कह चुके थे। अभी उन्होंने न केवल इस गोल्डन डोम परियोजना के लिए 25 अरब डॉलर खर्च करने का प्रावधान कर दिया है, बल्कि अमेरिकी फौज की स्पेस कमान संभालने वाले जनरल को इसका प्रभारी भी नियुक्त कर दिया है। इस सुरक्षा प्रणाली में शामिल तकनीकी उपायों को लेकर अमेरिका में पूरी गोपनीयता बरती जा रही है। रही बात आयरन डोम (लौह गुंबद) की तो यह राडारों और मिसाइलों की एक सघन व्यवस्था है, जिसे छोटी मिसाइलों और ड्रोन हमलों से बचाव के लिए खड़ा किया गया है।

अमेरिका न केवल क्षेत्रफल में इसराइल का 400 गुना है, बल्कि जिन क्षेत्रों का बचाव उसको करना पड़ेगा, वे महज उसकी मुख्यभूमि तक सीमित नहीं हैं। उसका उत्तरी प्रांत अलास्का अमेरिकी मुख्यभूमि से काफी दूर, कनाडा के उत्तर में है, जबकि एक और प्रांत हवाई तो इतना दूर है कि वहां पहुंचने के लिए अमेरिकियों को आधा प्रशांत महासागर पार करना पड़ता है। दूसरा मामला उन खतरों का है, जिनसे दोनों को अपना बचाव करना है। जाहिर है, इनकी भी आपस में कोई तुलना नहीं है। अमेरिका के सामने एक खतरा 9/11 जैसी घटनाओं का है, जिनसे सुरक्षा का कोई थोक उपाय संभव ही नहीं है। इससे आगे की चुनौती न्यूक्लियर आईसीबीएम की है और वही गोल्डन डोम के लिए अकेला इम्तहान है।

डोनाल्ड ट्रंप ने इस फ्यूचरिस्टिक सुरक्षा उपाय के लिए पहला बजट और इसके प्रभारी का नाम घोषित करते हुए 1980 में अमेरिकी राष्ट्रपति का पद संभालने वाले रॉनल्ड रीगन को याद किया, जिन्होंने सबसे पहले इस तरह की एक संभावित योजना 'स्टार वॉर' जैसे फिल्मी नाम के साथ घोषित की थी। सोवियत संघ और अमेरिका के बीच जारी कोल्ड वॉर उस समय अपने चरम पर पहुंचा हुआ था और अमेरिका के मुकाबले में अपनी भी तैयारियाँ शुरू कर देना सोवियत नेतृत्व के लिए लाजमी हो गया। इस नई चुनौती ने सोवियत अर्थव्यवस्था पर इतना दबाव डाला कि फिर वह फिसलती ही चली गई। ध्यान रहे, अमेरिकी सुरक्षा के सामने तब भी चुनौती आईसीबीएम्स (अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइलों) की ही थी और थोड़े-बहुत तकनीकी उन्नयन के बावजूद आज भी यह उन्हीं की है। फर्क सिर्फ इतना आया है कि सोवियत यूनियन के बिखराव के बाद इन हथियारों का संकेंद्रण रूस में हो गया है और इसमें चीन और उत्तर कोरिया के रूप में दो और सैन्य भंडारों का इजाफा हो गया है। रूस ने कुछ समय पहले यूक्रेन पर एक एक्सपेरिमेंटल मिसाइल दागी थी, जिसकी रफ्तार ध्वनि की दस गुनी यानी उल्कापात के समतुल्य बताई गई थी। यह भी कहा गया था कि इस हाइपरसोनिक मिसाइल को दुनिया की किसी भी तकनीक से नाकाम नहीं किया जा सकता। बड़ी दूरी के लिए ऐसी किसी मिसाइल का सफल परीक्षण रूस ने अब तक नहीं किया है। गोल्डन डोम अमेरिका की अग्रिम पहल है।

लड़ाई के दौरान एक मिसाइल को चार बिंदुओं पर नाकाम किया जा सकता है। सबसे पहले तो उसके गोदाम को ही निशाना बनाया जाए, जो किसी कमजोर दुश्मन के साथ ही किया जा सकता है। दूसरा बिंदु उसके रफ्तार पकड़ने से पहले, यानी यात्रा के शुरुआती चरण में ही उसे मार गिराने का है। यह तभी संभव है जब इसके बारे में पक्की सूचना उपलब्ध हो और मिसाइल छोड़े जाने की जगह तक बमवर्षक पहुंच सकें। चलायमान प्लेटफॉर्म्स ने इस काम को बहुत मुश्किल बना दिया है। तीसरा बिंदु मिसाइल के सर्वोच्च बिंदु पर उसे मारने का है, जहां नीचे आने से पहले उसकी रफ्तार कम होती है। इसके लिए लेजर हथियारों के प्रयोग के बारे में बहुत पहले से सोचा जा रहा है लेकिन इसे अब तक आजमाया नहीं जा सका है। चौथा और लगभग असंभव काम टारगेट पर गिरते वक्त उसको मार गिराने का है। इस समय आईसीबीएम की गति उल्का जैसी होती है और उसके निशाने पर क्या है, यह भी पता नहीं होता।

ट्रंप का कहना है कि गोल्डन डोम को इन चारों ही बिंदुओं पर आईसीबीएम को निशाना बना सकने के लिहाज से तैयार किया जाएगा। अनोखी बात उन्होंने यह कही कि इसे 2029 तक, यानी मोटे तौर पर उनके इसी कार्यकाल के अंत तक बनाकर तैनात भी कर दिया जाएगा। इसपर कुल खर्चा उन्होंने 175 अरब डॉलर का होगा। 2029 तक गोल्डन डोम को तैनात करने के वादे पर चलने के लिए अगले तीन साल 50-50 अरब डॉलर की व्यवस्था तो करनी ही होगी। किन तकनीकों के इस्तेमाल से गोल्डन डोम का निर्माण किया जाएगा, उनकी कोई भनक जब तक नहीं मिलती, तबतक उनके बारे में बात करना बेकार है। लेकिन फिलहाल इसके दो पहलुओं पर बात करना जरूरी है। एक पहलू अंतरराष्ट्रीय संबंधों का और दूसरा बाकी दुनिया की सुरक्षा का। ट्रंप ने गोल्डन डोम की सुरक्षा व्यवस्था में कनाडा को भी शामिल करने की इच्छा जताई और कनाडा के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने व्यापारिक मामलों में अमेरिका के हाथों हो रही अपनी दुर्गति के बावजूद तुरंत इसमें अपनी दिलचस्पी जता दी। लेकिन अभी नाटो की सुरक्षा व्यवस्था के तहत अमेरिका ने यूरोप में इतने सारे राडार और मिसाइलें तैनात कर रखी हैं, जो गोल्डन ग्लोब के इंतजाम के साथ ही गैरजरूरी हो जाएंगी। यूरोप के वाचाल नेताओं का ऐसे में चुप्पी साधे रखना लाजमी है।

अगला मामला दुनिया की सुरक्षा का है। सुरक्षा तकनीकी की समझ बताती है कि आईसीबीएम से सुरक्षा की कोई भी फुलप्रूफ व्यवस्था अंतरिक्ष में कमांड सेंटर बनाए बिना और सैटेलाइटों पर मिसाइलें तैनात किए बिना बनाई ही नहीं जा सकती। यानी यह अंतरिक्ष के सैन्यीकरण की दिशा में पहला कदम होने जा रहा है। एक अंतरराष्ट्रीय सहमति के तहत इसपर अभी तक रोक लगी हुई थी लेकिन वह रोक बिना किसी पूर्व घोषणा के धीरे-धीरे खत्म होने की तरफ बढ़ रही है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से सैन्य मामलों में कोई भी बढ़त दो साल और अधिकतम पांच साल ही टिक पा रही है, फिर चाहे वह एटम बम हो या हाइड्रोजन बम या आईसीबीएम। ट्रंप की गोल्डन डोम वाली घोषणा के साथ ही रूस और चीन भी अलग-अलग या साथ मिलकर इसी दिशा में कदम बढ़ाएंगे और सर्वनाशी युद्ध का खतरा जमीन से सीधे आसमान में चला जाएगा।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

गुजरात में पहलगाम हमले पर बोले पीएम मोदी

पटेल की बात मानी होती तो हमला न होता

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात दौरे पर गए प्रधानमंत्री मोदी ने आज बड़ा बयान देते हुए कहा कि अगर 1947 में देश के विभाजन के बाद प्रथम गृह मंत्री सरदार पटेल की सलाह मान ली गई होती तो पहलगाम हमला कभी नहीं हो पाता। पीएम ने कहा कि अगर पटेल साहब की बात मानी होती तो भारत के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियां रुक गई होतीं।

सरदार पटेल की सलाह नजरअंदाज की गई- गांधीनगर में एक रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने दावा किया कि पाकिस्तान की ओर से कश्मीर पर कब्जा करने के लिए आक्रमण करने वाले मुजाहिदीन लड़ाकों से निपटने के बारे में पटेल की सलाह को कथित तौर पर नजरअंदाज कर दिया गया।

1947 में भारत माता के टुकड़े कर दिए गए- पीएम मोदी ने कहा, 1947 में भारत माता के टुकड़े कर दिए गए। जब जंजीरें काटनी चाहिए थीं, तब हाथ काट दिए गए। देश तीन टुकड़ों में बंट गया और उसी रात कश्मीर की धरती पर पहला आतंकी हमला हुआ। पाकिस्तान ने मुजाहिदीन के नाम पर आतंकियों की मदद से भारत माता के एक हिस्से पर कब्जा कर लिया। अगर उस दिन ये मुजाहिदीन मारे गए होते और सरदार पटेल की सलाह मान ली गई होती तो पिछले 75 सालों से आतंकवादी घटनाओं का चल रहा ये सिलसिला न दिखता।

ऑपरेशन सिंदूर कैमरे के सामने किया, ताकि कोई सबूत न मांगे - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात में लगातार दूसरे दिन मंगलवार को ऑपरेशन सिंदूर पर बात की। उन्होंने कहा, हमने आतंकवाद के 9 ठिकाने तय करके 22 मिनट में उन्हें ध्वस्त कर दिया। और ये सब कुछ कैमरे के सामने किया, ताकि कोई सबूत न मांगे।

ऐसा माना जा रहा है कि मोदी ने यह बात उरी आतंकी हमले के बाद पीओके में की गई भारतीय सेना की सर्जिकल स्ट्राइक को लेकर की। तब विपक्ष ने लगातार इसके सबूत मांगे थे। उन्होंने कहा, पाकिस्तान जानता है कि वो सीधी लड़ाई में हमसे जीत नहीं सकता है इसीलिए वो आतंकवादी भेज रहा है। उनके यहां मारे गए आतंकवादियों के जनाजे में पाकिस्तानी झंडे लगाए गए, यह कोई प्रॉक्सी वॉर नहीं है। पीएम मोदी 2 दिन के गुजरात दौरे पर थे। उन्होंने गांधीनगर में 2 किमी लंबा रोड शो किया। इसके बाद गांधीनगर में गुजरात की शहरी विकास यात्रा के 20 साल पूरे होने के जश्न में हिस्सा लिया।

पद्म पुरस्कारों का वितरण

लोक गायिका शारदा को मरणोपरांत और ऋतंभरा को पद्मभूषण

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में दूसरे फेज के पद्म अवॉर्ड्स दिए। इनमें लोकगायिका स्वर्गीय डॉ. शारदा सिन्हा समेत 68 हस्तियों को सम्मानित किया जा रहा है। इस दौरान पीएम मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, विदेश मंत्री एस जयशंकर भी

मौजूद हैं। मंगलवार को हुई अवॉर्ड सेरेमनी में बिहार की दिवंगत लोक गायिका डॉ. शारदा सिन्हा को मरणोपरांत पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। वहीं, राम मंदिर आंदोलन में शामिल रहीं साध्वी ऋतंभरा को सामाजिक कार्य के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। इससे पहले 28 अप्रैल को पहले चरण की अवॉर्ड सेरेमनी में 71 हस्तियों को पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

देश के डिफेंस को नई ऊंचाई पर ले जाएंगे स्वदेशी सैटेलाइट

- पांच वर्षों में 52 जासूसी उपग्रहों को कक्षा में स्थापित करने की योजना

नई दिल्ली (एजेंसी)। वे अदृश्य नायक थे। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान आसमान में अदृश्य रहकर लेकिन सतर्क आंखों से अपने काम को बखूबी अंजाम दिया। कार्टोग्राफी उपग्रहों (कार्टोसैट), रडार इमेजिंग उपग्रहों (रिसैट्स) और पृथ्वी-अवलोकन उपग्रहों (ईओएस) ने पाकिस्तान की एयर डिफेंस सिस्टम और हवाई ठिकानों पर सटीक हमला करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे यह बात सामने आई कि हाई

तकनीक वाले युद्ध के युग में अंतरिक्ष में ऐसे और अधिक मूक प्रहरी होने का महत्व है।

निगरानी क्षमता बढ़ाने की जरूरत- भारत के पास इस समय विभिन्न कक्षाओं में करीब 10 सर्विलांस सैटेलाइट हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष वी नारायणन और अंतरिक्ष नियामक भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र (आईएनएसपीएसीई) के अध्यक्ष पवन गोयनका ने हाल ही में देश की निगरानी क्षमताओं को बढ़ाने की जरूरत पर जोर दिया है।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

छोड़कर आपको दूर जाने की ज़िद
आपको भी हमें ही मनाने की ज़िद
आपको चाहकर आपसे ही गिला
आपकी भी हमें ही सताने की ज़िद
आपके इश्क में डूबने की कसक
आपको आपसे ही मिलाने की ज़िद
आपसे दिल्लगी आपसे ही वफ़ा
आपको हर तरह आज़माने की ज़िद
आपकी याद में रात सोये नही
फिर सुबह आपको भूल जाने की ज़िद।

- समीक्षा सिंह

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद का निर्णय

सरकारी विभागाध्यक्षों के वित्तीय अधिकार बढ़ें

80 प्रतिशत मेडिकल एडवांस दे सकेंगे विभाग; टाइपराइटर जैसे पुराने पद हटाए गए

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश सरकार ने विभागों के विभागाध्यक्षों के वित्तीय अधिकार बढ़ा दिए हैं। इसके लिए वित्तीय अधिकारों के प्रत्यायोजन 2025 को मंजूरी दी गई है। अब अधिकारी तेजी से निर्णय ले सकेंगे और बजट का सही समय पर उपयोग हो सकेगा। पुराने नियम 2012 के थे, अब 13 साल बाद इन्हें बदला गया है।

प्रदेश सरकार की मंगलवार को कैबिनेट बैठक हुई। बैठक में समय के साथ सरकारी कामों को आसान बनाने पर फोकस रहा है। टाइपराइटर जैसे पुराने पद हटाए गए हैं और कंप्यूटर ऑपरेटर जैसे नए पदों के लिए पद सृजन की मंजूरी दी गई है। इससे सरकार के अंदर भी 'ईज ऑफ डूइंग' (काम करने में आसानी) का माहौल बनेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंगलवार को मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा वित्तीय अधिकार पुस्तिका 2025, भाग-1 का अनुमोदन किया गया है। वित्त विभाग को लिपिकीय त्रुटियों को सुधारने और भावी आवश्यकताओं के अनुसार संशोधन करने की अनुमति दी गई है। साथ ही, हिन्दी अनुवाद जारी करने की भी अनुमति दी गई है। अनुमोदित वित्तीय अधिकार 1 जुलाई, 2025 से लागू होंगे।

वित्तीय अधिकार पुस्तिका 2012, भाग-1 में संशोधन के प्रमुख कारणों में 13 वर्ष से अधिक की अवधि में विभिन्न मदों के मूल्यों/लागतों में वृद्धि, कार्यालय संचालन से संबंधित कतिपय नवीन स्वरूपों के व्यय भी प्रचलन में आये हैं। अप्रासंगिक हो गई मदों का विलोपन, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नवीन मदों को सम्मिलित किया जाना, अप्रासंगिक हो चुके कार्यालयीन उपकरण / सामग्री का विलोपन, अधिकारों का विकेंद्रीकरण के क्रियान्वयन में गति प्रदान करने के लिए, बजट प्रावधान का समयसीमा में उपयोग शामिल है।

वित्तीय अधिकार पुस्तिका 2012, भाग-1 में संशोधन नवीन प्रावधान अंतर्गत बजट नियंत्रण अधिकारी घोषित किया जाने के लिए प्रशासकीय विभाग को अधिकार, Consultancy Firm/Agency से कार्य के लिए अधिकार, Interns को संलग्न करने के लिए अधिकार, मूलभूत नियम 46 अंतर्गत मानदेय की स्वीकृति, पेंशन / उपदान के अधिक भुगतान को write off करने का अधिकार है।

विभागीय भवन तोड़ने की अनुमति संबंधित विभाग देगा। 80 प्रतिशत मेडिकल एडवांस देने का अधिकार विभाग को, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग की अनुमति/परामर्श की आवश्यकता नहीं होगी।

वित्तीय अधिकार पुस्तिका 2025 भाग-1 का अनुमोदन इज ऑफ डूइंग बिजनेस शासकीय कार्यों में लाने का प्रयास है।

बारिश-बिजली से

केरल और महाराष्ट्र में 5 की मौत

लैंडस्लाइड से सैकड़ों घरों को नुकसान, मुंबई-ठाणे में आज बारिश का रेड अलर्ट

नई दिल्ली/मुंबई/भोपाल/लखनऊ (एजेंसी)। केरल में 24 मई को मानसून की दस्तक के बाद लगातार बारिश से आम जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। बारिश से जुड़ी घटनाओं में अब तक 4 लोगों की मौत हो गई है। बारिश-लैंडस्लाइड के चलते 29 घर ढह गए, 868 घर क्षतिग्रस्त हुए हैं। ट्रेनें देरी से चल रही हैं। निचले इलाके जलमग्न हैं।

मौसम विभाग ने मंगलवार को तिरुवनंतपुरम, कोल्लम, अलाप्पुझा, कोट्टयम, इडुक्की, एर्नाकुलम, मलप्पुरम, कोझिकोड, कन्नूर और कासरगोड में भारी बारिश को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। यहां बारिश के साथ 50 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से तेज हवाएं चलने की आशंका है।

वहीं, महाराष्ट्र में सोमवार को दो लोगों की मौत हो गई। ठाणे में बिजली गिरने से एक महिला की मौत हो गई। मुंबई में लगातार बारिश के कारण पेड़ गिरने की अलग-अलग घटनाओं में 26 साल के एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि एक अन्य घायल हो गया। मुंबई और ठाणे में आज भी भारी बारिश का अलर्ट है। मुंबई में सोमवार को मानसून ने तय समय से 16 दिन पहले दस्तक दी थी। पहले ही दिन अंधेरी, भांडुप, पवई में बारिश से सड़कों पर पानी भर गया। लोकल ट्रेन और फ्लाइट्स भी प्रभावित हुईं। वर्ली अंडरग्राउंड मेट्रो स्टेशन में पानी भर गया।

मौसम विभाग के मुताबिक, देश के 14 राज्यों में मानसून पहुंच चुका है। तीन साइक्लोनिक सर्कुलेशन के एक्टिव होने की वजह से अगले चार दिन तक आंधी और बारिश का अलर्ट जारी किया है। आमतौर पर केरल में मानसून 1 जून और मुंबई में 11 जून को पहुंचता है। मौसम विभाग ने आज हिमाचल प्रदेश में बारिश, आंधी-तूफान, बिजली और ओलावृष्टि का अलर्ट जारी किया है। 27-28 मई को शिमला, कुल्लू और मंडी जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है।

उधर, मध्य प्रदेश में तेज गर्मी रही और 6 जिलों में तेज बारिश भी हुई। 4 जिलों में दोपहर का तापमान 40 डिग्री के पार रहा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 28 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पीलीभीत में इंडो नेपाल बॉर्डर पर धर्म परिवर्तन का बड़ा खेल

● 3 हजार सिखों को बनाया ईसाई, विदेशी ताकतें भी शामिल

पीलीभीत (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में पीलीभीत के इंडो नेपाल बॉर्डर पर बसे कई गांव मदरियों द्वारा तमाम प्रलोभन देकर सिखों का धर्मांतरण कराए जाने का मामला चर्चाओं में है। इस पूरे मामले में एक एफआईआर दर्ज होने के बाद अब तमाम जांच एजेंसियां भी अलर्ट हो गई हैं। दरअसल भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद तमाम सिख समुदाय के लोग पाकिस्तान छोड़कर भारत आ गए थे और उन्हें शारदा नदी के किनारे विस्थापित परिवारों का दर्जा देकर सरकार द्वारा बसा दिया गया था। इन परिवारों को राय सिखों को के नाम से भी जाना जाता है। इंडो नेपाल बॉर्डर के 12 गांव में करीब 25 हजार की आबादी राय सिखों की है।

धर्म परिवर्तन के मामले की शिकायत करने वाली गुरु द्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव परमजीत सिंह का कहना है कि धर्म परिवर्तन का खेल वर्ष 2002 से शुरू हुआ, जहां नेपाली पादरियों ने यूपी के पीलीभीत के तमाम इलाकों को निशाना बना लिया। यहां लालच देकर कुछ लोगों को ईसाई धर्म से जोड़ा गया। इसके बाद सिंडिकेट के जरिए चैन सिस्टम लागू करते हुए करीब 3000 लोगों का धर्म परिवर्तन कराया गया। इन लोगों को पढ़ाई आर्थिक लाभ और मानसिक पीड़ा से दूर करने की बात कहकर प्रलोभन दिया गया।

सिख धर्म पर खतरे की चर्चा- सिंह गुरुद्वारा सभा बैल्हा के सचिव परमजीत सिंह का कहना है कि 2001 से अब तक कुल 3000 लोगों का धर्म परिवर्तन ईसाई मिशनरी द्वारा कर दिया गया है। ग्रामीणों को धर्म परिवर्तन के लिए तमाम तरीके के प्रलोभन दिए गए जिन लोगों ने धर्म परिवर्तन कर दिया। उन्होंने घर के बाहर ईसाई धर्म के प्रतीक चिन्ह भी बना लिए। इसके साथ ही कुछ घरों में चर्च जैसी गतिविधियां भी संचालित होने लगी और चंगाई सभा का भी आयोजन बड़े पैमाने पर होने लगा। इसके बाद सिख धर्म को खतरे में देखते हुए उन्होंने इस सब के विरोध में आवाज उठाना शुरू किया। करीब 10 महीने पहले प्रशासनिक अधिकारियों से कार्रवाई की मांग की।

प्रधान का देवर ही निकला पादरी- गुरुद्वारा कमेटी के लोगों का कहना है कि उनके पड़ोसी गांव टाटरगंज की महिला ग्राम प्रधान का देवर अर्जुन सिंह खुद ही एक पादरी है जो लोगों को धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है।

पाकिस्तानी टावर-बंकर उड़ाने वाली राइफल 'विध्वंसक' का प्रदर्शन

नई दिल्ली/श्रीनगर (एजेंसी)। बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स (बीएसएफ) ने मंगलवार को ऑपरेशन सिंदूर में इस्तेमाल की गई एंटी-मटेरियल राइफल 'विध्वंसक' का प्रदर्शन किया।

विध्वंसक की रेंज 1300 से 1800 मीटर है। इसके जरिए ही ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तानी टावरों और बंकरों को नष्ट किया गया था। ऑटोमैटिक ग्रेनेड लॉन्चर सिस्टम भी पाकिस्तानी चौकियों, ठिकानों और बुलेटप्रूफ गाड़ियों को नष्ट करने में सफल साबित हुआ। इसकी रेंज 1700-2100 मीटर है। इससे दागे गए ग्रेनेड का असर 10 मीटर तक होता है।

जस्टिस बी वी नागरत्ना, देश की पहली महिला सीजेआई बनेंगी

नईदिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस बी वी नागरत्ना सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम में शामिल होने वाली पहली महिला जज बन गई हैं। 23 मई को जस्टिस अभय श्रीनिवास ओका के रिटायरमेंट के चलते 25 मई को जस्टिस नागरत्ना सुप्रीम कोर्ट की 5वीं सबसे सीनियर जज बन गईं। सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम में 5 सबसे सीनियर जज ही रहते हैं, जिसमें सीजेआई यानी चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया भी शामिल होते हैं। भारत में सीजेआई की नियुक्ति वरिष्ठता के आधार पर होती है। ऐसे में बी वी नागरत्ना 11 सितंबर 2027 को भारत की 50वीं मुख्य न्यायाधीश बनेंगी। वो इस पद पर पहुंचने वाली पहली महिला होंगी। उनका कार्यकाल लगभग 1 महीने का होगा। वो 29 अक्टूबर 2027 को सीजेआई के पद से रिटायर होंगी।

राहुल गांधी के खिलाफ याचिका खारिज

वाराणसी कोर्ट में सुनवाई हुई, अमेरिका में भगवान राम को काल्पनिक कहने का आरोप

वाराणसी (एजेंसी)। राहुल गांधी के खिलाफ याचिका को वाराणसी कोर्ट ने मंगलवार को खारिज कर दी। कोर्ट में याचिकाकर्ता की मेंटेनिबिलिटी पर पहले बहस हुई। इसके बाद राहुल गांधी के खिलाफ याचिका को सुनने योग्य नहीं माना गया। राहुल गांधी की ओर से एडवोकेट अनुज यादव कोर्ट में मौजूद रहे थे। राहुल गांधी पर भगवान राम को काल्पनिक कहने का आरोप है। 19 मई को जज ने ऑर्डर सुरक्षित रख लिया था। एडवोकेट हरिशंकर पांडेय ने 12 मई को याचिका में दावा किया कि भारतीय संसद में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी इसी साल 21 अप्रैल को अमेरिका के बोस्टन पहुंचे थे। यहां पर ब्राउन यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स के साथ उनका एक सेशन था। यहां राहुल ने भगवान श्रीराम को लेकर विवादित बयान दिए थे। उन्होंने भगवान राम को 'पौराणिक' बताया था और उस युग पर बताई जाने वाली कहानियों को काल्पनिक कहा था।

कोटा में 18 साल की नीट एस्पिरेंट ने सुसाइड किया

कमरे में नहीं लगा था एंटी-हैंगिंग डिवाइस; इस साल का 15वां सुसाइड

जयपुर (एजेंसी)। 18 साल की नीट एस्पिरेंट ने कोटा में सुसाइड कर लिया। छात्रा जम्मू-कश्मीर की रहने वाली थी और कोटा के प्रताप चौराहे स्थित पीजी में रहकर तैयारी कर रही थी।

रिश्तेदार को फोन कर कहा- सुसाइड कर रही हूं- महावीर नगर पुलिस स्टेशन के सर्किल इंस्पेक्टर रमेश कविया ने बताया, 'सुसाइड करने से पहले रविवार को छात्रा जीशान ने अपने किसी रिश्तेदार से बात की थी और बताया था कि वो शायद सुसाइड कर सकती है।' इसके बाद बुरहान नाम के उसके रिश्तेदार ने तुरंत पीजी में ही रहने वाली अन्य छात्रा ममता को फोन करके जीशान को देखने के लिए कहा था। इसके बाद ममता दौड़कर जीशान के कमरे की ओर भागी और पाया कि कमरा अंदर से बंद किया गया है। इसके बाद ममता ने शोर मचाया और लोगों की मदद से दरवाजा तोड़ा तो देखा जीशान फांसी लगा चुकी है।

एक महीने पहले ही कोटा लौटी थी छात्रा- पुलिस का कहना है कि छात्रा पहले कोटा में मीट की कोचिंग कर रही थी। इसके बाद वो घर चली गई थी। इस बार वो वापस लौटी लेकिन किसी कोचिंग में एडमिशन नहीं लिया था। छात्रा सेल्फ स्टडी करके ही तैयारी करना चाहती थी।

कमरे में नहीं था एंटी-हैंगिंग डिवाइस- पुलिस ने कहा कि छात्रा ने जिस पंखे से फांसी लगाई वहां एंटी-हैंगिंग डिवाइस नहीं लगा था। एंटी हैंगिंग डिवाइस पंखे में लगाया जाने वाले एक स्प्रिंग जैसा डिवाइस होता है जो फांसी लगाने पर खुल जाता है।

कांग्रेस बोली- प्रेम चोपड़ा की तरह डायलॉग मार रहे मोदी

● गंभीर सवालों का जवाब नहीं दे रहे, उनके सांसद भी ओछी राजनीति कर रहे

नई दिल्ली (एजेंसी) कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने पहलगाम आतंकी हमले में शामिल आतंकियों को न पकड़ पाने के लिए सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि देश को अब तक कई महत्वपूर्ण सवालों के जवाब नहीं मिले, जिनमें से एक है कि पाकिस्तान के साथ किन शर्तों पर सीजफायर समझौता हुआ। मोदी इन अहम सवालों के जवाब की बजाय फिल्मी प्रेम चौपड़ा वाली डायलॉगबाजी कर रहे हैं और उनके सांसद ओछी राजनीति कर रहे। पवन खेड़ा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा-सिंदूर मेरी रगों में बहता है, गोलियां खाओ, रोटियां खाओ जैसे डायलॉग बोल रहे थे। पीएम मोदी कभी प्रेम चोपड़ा की तरह तो कभी परेश रावल की तरह डायलॉग मार रहे हैं। कभी कहते हैं कि सिंदूर मेरी रगों में बहता है।

जयपुर में सोना-चांदी ढूंढने उतरे 4 लोगों की मौत

● ज्वेलरी कंपनी ने 8 को सेप्टिक टैंक में भेजा था, जहरीली गैस से दम घुटा

जयपुर (एजेंसी) जयपुर में सेप्टिक टैंक में सोना-चांदी तलाशने के लिए उतारे गए 4 सफाई कर्मचारियों की मौत हो गई। इनके 2 अन्य साथियों को गंभीर हालत में महात्मा गांधी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है, जबकि 2 को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। बताया जा रहा है कि जहरीली गैस के कारण पहले सफाईकर्मी अचेत हुए, फिर दम तोड़ दिया।

घटना सांगानेर सदर थाना इलाके में सीतापुरा इंडस्ट्रियल एरिया के जी-ब्लॉक स्थित ज्वैलरी जोन में सोमवार रात 8.30 बजे हुई। यहां अचल ज्वैल्स प्राइवेट लिमिटेड के 10 फीट गहरे सेप्टिक टैंक की सफाई की जा रही थी। आरोप है कि पहले सफाई कर्मचारियों ने तेज धूप का हवाला देते हुए टैंक में उतरने से इनकार कर दिया था। बाद में कंपनी ने इन कर्मचारियों को अतिरिक्त लाभ (वेतन के अलावा एक्स्ट्रा रुपए) का लालच दिया था। इसके बाद एक-एक कर 8 कर्मचारी सफाई करने टैंक में उतरे थे। मरने वाले सभी युवक यूपी के सुलतानपुर और अंबेडकर नगर के रहने वाले थे।

देश में कोरोना से 11 की मौत, 1047 एक्टिव केस

● महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा 5 मौतें, एक हफ्ते में 787 नए मामले सामने आए

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कोरोना वायरस के मामलों की संख्या 1047 हो गई है। सबसे ज्यादा 430 एक्टिव केस केरल में हैं। महाराष्ट्र में 208, दिल्ली में 104 और गुजरात में 83 केस हैं। कर्नाटक के 80 केसों में से सिर्फ 73 बेंगलुरु में हैं। वहीं महाराष्ट्र, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक और मध्य प्रदेश में कुल 11 मरीजों की मौत हो चुकी है। इनमें से नौ की मौत एक हफ्ते के भीतर हुई है। कोरोना से सबसे ज्यादा पांच मौतें महाराष्ट्र में हुई हैं। ठाणे में सोमवार को एक महिला की मौत हुई।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के मुताबिक पिछले एक हफ्ते में 787 नए मरीज दर्ज किए गए हैं। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के डायरेक्टर डॉ राजीव बहल ने बताया कि अभी तक देश में 4 वैरिएंट मिले हैं। इनमें एलएफ.7, एक्सएफजी , जेएन.1 और एनबी.8.1 वैरिएंट शामिल हैं।

यौन शोषण में बरी बृजभूषण का अयोध्या में स्वागत

अयोध्या (एजेंसी)। नाबालिग पहलवान से यौन शोषण मामले में बरी होने के बाद बृजभूषण सिंह पहली बार अयोध्या पहुंचे। एयरपोर्ट पर 1000 से ज्यादा कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों के साथ उनका स्वागत किया। इसके बाद वे हनुमानगढ़ी मंदिर पहुंचे और हनुमान जी के दर्शन-पूजन किए। बृजभूषण बोले- मैंने कहा था कि अगर मेरे ऊपर लगे आरोप साबित हो जाते हैं तो मैं खुद फांसी पर लटक जाऊंगा। कोर्ट के फैसले ने मेरी उस बात को सही साबित कर दिया। भूपेंद्र हुड्डा 11 बजे तक मुख्यमंत्री बनने वाले थे, लेकिन संत्री भी नहीं बन पाए। आम आदमी पार्टी का तो सत्यानाश हो गया।

मेरा जो भी विरोध करेगा, भगवान उसे दंड देंगे, क्योंकि मैं हनुमान जी का भक्त हूं। जो लोग मुझ पर आरोप लगा रहे थे, वही कभी मुझे 'कुश्ती का भगवान' कहते थे। एक गीत मैं उन्हीं लोगों के लिए कहना चाहता हूं- कभी पास आके वो इतना बता दें, मुझे सता कर क्या मिला?

अस्पताल पहुंचकर तेजस्वी को पिता बनने पर सीएम ममता बनर्जी ने दी बधाई

ममता ने बच्चे को बताया लकी

नई दिल्ली (एजेंसी)। लालू परिवार में घर आज खुशखबरी आई है। बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव और उनकी पत्नी राजश्री को बेटा हुआ है। इस मौके पर पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने उन्हें बधाई दी है। ममता ने खुद अस्पताल पहुंचकर राजश्री और बच्चे का हाल जाना। ममता ने अस्पताल जाकर लालू यादव से भी मुलाकात की। ममता ने कहा कि ये बच्चा बिहार चुनाव के लिए उनके परिवार के लिए लकी है। तेजस्वी ने इसके लिए ममता को धन्यवाद दिया।

तेजस्वी की पत्नी पर किया खुलासा- इस बीच ममता ने तेजस्वी और उनकी पत्नी की तारीफ भी की। उन्होंने कहा कि बच्चा बहुत सुंदर है, क्योंकि पिता और मां भी तो काफी सुंदर है। इसी के साथ उन्होंने खुलासा किया कि राजश्री बीते 9 महीने से बंगाल में ही थीं।

लालू यादव लेंगे बेटे के नाम पर अंतिम फैसला- बेटे का नाम रखने के बारे में पूछे जाने पर तेजस्वी ने कहा कि पूरा परिवार बहुत खुश है और बेटे का नाम रखने पर लगा हुआ है। हर कोई अलग-अलग नाम रख रहा है। उन्होंने कहा कि अब फैसला हुआ है कि हर कोई एक नाम लालू जी को देगा और जो उन्हें सबसे अच्छा लगेगा वही हम रखेंगे।

भारतीय नौसेना को और मजबूत करने का फैसला, 44000 करोड़ का है प्लान

● अब न आकाश से, न समंदर से, भारत पर हमला नहीं कर पाएंगे चीन-पाकिस्तान!

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारतीय वायुसेना और थल सेना ने जिस तरह से दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब दिया, उसने दुनिया को भारत की सैन्य ताकत का अंदाज़ा करा दिया। अब सरकार समुद्री सुरक्षा को भी नई धार देने जा रही है। चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों से बढ़ते खतरे को देखते हुए केंद्र सरकार ने भारतीय नौसेना को और मजबूत करने का फैसला लिया है। इसी दिशा में रक्षा मंत्रालय ने 44,000 करोड़ रुपये की लागत से 12 माइन काउंटरमेजर वेसल्स यानी 'बारूदी सुरंग खोजी और नष्ट करने वाले युद्धपोत' बनाने की योजना को हरी झंडी दिखा दी है।

समुद्र की चुप्पी में छिपे खतरे होंगे खत्म- इन विशेष युद्धपोतों की सबसे बड़ी ताकत यह होगी कि ये समुद्र की गहराइयों में दुश्मन द्वारा बिछाई गई बारूदी सुरंगों को ढूंढने और उन्हें निष्क्रिय करने में सक्षम होंगे। भारत की विशाल 7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा और सैकड़ों पोर्ट्स की सुरक्षा के लिए ऐसे जहाज अब ज़रूरत बन चुके हैं।

भारतीय नौसेना के पास नहीं है एक भी एमसीएमवी- फिलहाल भारतीय नौसेना के पास एक भी समर्पित माइन हंटर पोत मौजूद नहीं है। पहले मौजूद करवार और पॉन्डिचेरी क्लास के पोत रिटायर हो चुके हैं। अब कुछ गिने-चुने जहाजों पर क्लिप-ऑन माइन काउंटरमेजर सुइट्स लगे हैं, लेकिन ये देश की समग्र समुद्री सुरक्षा के लिहाज़ से काफी नहीं हैं।

7-8 साल में बनकर तैयार होंगे पहले युद्धपोत- रक्षा मंत्रालय जल्द ही इस परियोजना को डिफेंस एक्विजिशन काउंसिल के समक्ष प्रस्तुत करेगा। एसेप्टेंस ऑफ नेसेसिटी मिलते ही टेक्नो-कमर्शियल बिड्स मंगाई जाएंगी और अनुबंध पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। इसके बाद पहला पोत तैयार होने में लगभग 7 से 8 साल का समय लगेगा।

समुद्री सीमा की सुरक्षा होगी और सख्त- विशेषज्ञों के मुताबिक, यह परियोजना रणनीतिक रूप से बेहद अहम है, खासकर तब जब चीन की पनडुब्बियां और पाकिस्तान की युआन-क्लास डीजल-इलेक्ट्रिक सबमरीन लगातार भारत के समुद्री हितों के लिए खतरा बनी हुई हैं।

● यूपी की बेटियों को सीएम योगी का बड़ा तोहफा

बेटियों के विवाह पर 1 लाख रुपये, कन्या के खाते में 60 हजार

25 हजार का उपहार भी मिलेगा

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत अब बेटियों के विवाह पर 51 हजार की जगह 1 लाख रुपये खर्च होंगे। योगी सरकार द्वारा लिए गए इस फैसले से गरीब परिवारों को बड़ी राहत मिलेगी। इस योजना के तहत कन्या के खाते में 60 हजार रुपये भेजे जाएंगे 25 हजार का उपहार दिया जाएगा और 15 हजार रुपये आयोजन पर खर्च होंगे। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह के तहत बेटियों के विवाह पर 51 हजार की बजाए अब एक लाख रुपये की धनराशि खर्च होगी। गरीब बेटियों के विवाह के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से बड़ा कदम उठाया गया है। जनपद में वर्ष 2017-18 से 2024-25 तक 7064 वर-वधुओं का सामूहिक विवाह कराया गया है। जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन के निर्देशन में बीते सात मार्च को ही मझवां ब्लॉक के गांधी इंटरमीडिएट कॉलेज में 531 जोड़ों का सामूहिक विवाह कराया गया था।

मप्र में कोरोना के 5 एक्टिव केस

- जांच कम हो रही, जीनोम सीक्वेंसिंग नहीं
- गाइडलाइन का इंतजार

भोपाल (नप्र)। देश में कोरोना वायरस के मामले एक बार फिर बढ़ने लगे हैं। देश में एक्टिव केस की संख्या 1047 हो गई है, जो तीन दिन पहले लगभग 316 थी। मध्यप्रदेश में भी 5 एक्टिव केस है। इनमें इंदौर में 4 और उज्जैन में 1 कोविड केस सामने आया है।

कोरोना के बढ़ते मामलों के पीछे वायरस के लगातार हो रहे म्यूटेशन और दो नए सब-वैरिएंट का सक्रिय होना मुख्य कारण माना जा रहा है। हालांकि इसके बाद भी भोपाल समेत प्रदेश के कुछ बड़े शहरों में कोरोना को लेकर तैयारी और जागरूकता की कमी दिख रही है। भोपाल में सरकारी अस्पताल संदिग्ध कोरोना मरीजों की जांच के आदेश का इंतजार कर रहे हैं। वहीं, उज्जैन में भी यही हालात हैं। किसी सरकारी अस्पताल में जांच नहीं की जा रही है। अधिकारियों को कहना है कि फिलहाल कोविड को लेकर कोई गाइडलाइन नहीं मिली है।

आरटीओ अफसर को ट्रक ड्राइवर ने चप्पल से पीटा

उड़नदस्ता स्टाफ पर अवैध वसूली का आरोप लगाया, हाईवे जाम किया, 500 गाड़ियां फंसीं

मंडला (नप्र)। मंडला में ट्रक ड्राइवर और आरटीओ उड़नदस्ता के प्रभारी के बीच मारपीट हो गई। अफसर ने डंडा उठाया तो ट्रक ड्राइवर ने उसकी चप्पल से पिटाई कर दी। मौके पर मौजूद एक युवक इस घटना का वीडियो बनाने लगा। यह देखकर आरटीओ आरक्षक उसे पकड़ने लगा। मोबाइल छीनने की कोशिश भी की।

घटना रविवार को नेशनल हाईवे 30 पर छत्तीसगढ़ सीमा से सटे मोतीनाला-पाण्डुतला के बीच जोगी मंडी घाट की है। इसका वीडियो सोमवार देर रात सामने आया।

वीडियो में ड्राइवर और आरटीओ अफसर सड़क पर बहस करते दिख रहे हैं। ड्राइवर अवैध वसूली का आरोप लगाता सुनाई दे रहा है। इसी बीच प्रभारी उसे खींचकर अपनी गाड़ी के पास ले जाते हैं। गाड़ी में रखा डंडा निकालकर ड्राइवर को मारते हैं। इसके जवाब में ट्रक ड्राइवर अपनी चप्पल हाथ में लेकर आरटीओ अधिकारी पर बरसाने लगता है।

9वीं के छात्र की हार्ट अटैक से मौत, रातभर तड़पा

एमपी का छात्र गया था गुजरात के आश्रम, गोद में लेकर बैठा रहा सहायक सस्पेंड

भोपाल (नप्र)। गुजरात के नवसारी जिले में तपोवन आश्रमशाला में मध्यप्रदेश से पढ़ने गए 9वीं के छात्र की मौत हो गई। 13 वर्षीय छात्र मेघ शाह को रात में हॉस्टल में सीने में दर्द उठा था। उसने सहायक को इसकी जानकारी भी दी, लेकिन उसने इसे सामान्य समझा।

हॉस्टल सहायक हर्षद राठवा ने छात्र को पूरी रात गोद में रखकर संभालने की कोशिश की। बालक तड़पता रहा। सुबह उसे अस्पताल ले जाया गया।

हालांकि तब तक बहुत देर चुकी थी। समय पर इलाज नहीं मिलने के कारण छात्र की मौत हो गई। घटना 24 मई को रात 1 बजे की है। इसका सीसीटीवी भी सामने आया है। छात्र मेघ शाह बड़वानी के खेतिया का रहने वाला था। परिवार ने दोषियों पर कार्रवाई के लिए पुलिस को आवेदन दिया है। हालांकि, नवसारी ग्रामीण पुलिस ने डॉक्टर की प्रारंभिक जांच के आधार पर आकस्मिक मृत्यु का मामला दर्ज जांच शुरू की है।इधर, आश्रम प्रबंधन ने लापरवाही बरतने पर हॉस्टल सहायक हर्षद राठवा को सस्पेंड कर दिया है।मेघ शाह बड़वानी के खेतिया का रहने वाला था। वह एक्स्ट्रा क्लास अटैंड करने गया हुआ था।

एक्स्ट्रा क्लास के लिए छात्रों को बुलाया गया था- नवसारी के नेशनल हाईवे नंबर 48 पर स्थित तपोवन आश्रमशाला पिछले लगभग 35 वर्षों से स्कूल और हॉस्टल चला रही है। इसमें लगभग 322 छात्र पढ़ते हैं। वर्तमान में छुट्टियां होने के बावजूद अतिरिक्त कक्षा के लिए छात्रों को बुलाया गया था। इसी अतिरिक्त कक्षा में शामिल होने के लिए मेघ शाह मध्यप्रदेश के खेतिया से चार-पांच दिन पहले नवसारी आया था। जब वह घर से आया था, तब वह एकदम स्वस्थ था, यह बात स्कूल ने भी मानी है।

सीसीटीवी में छात्र रातभर तड़पता रहा- 24 तारीख की रात करीब 1:00 बजे मेघ शाह को अचानक शरीर में दर्द हुआ। उसने इस बात की जानकारी आश्रमशाला में सहायक के रूप में कार्यरत हर्षद राठवा को दी। लेकिन सहायक हर्षद राठवा ने रात 1 बजे से लेकर सुबह 8 बजे तक केवल उसे सांत्वना ही दी। इसके बाद मेघ शाह को एक निजी अस्पताल में इलाज के लिए ले जाया गया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और रास्ते में ही उसकी मौत हो गई।

पीएम मोदी क्षिप्रा नदी पर 778 करोड़ के घाट निर्माण कार्यों का भोपाल से करेंगे वर्चुअल भूमि-पूजन

80 करोड़ के स्टॉप डैम/बैराज/वेटेड कॉजवे निर्माण का भी होगा भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 31 मई को भोपाल के जम्बूरी मैदान से सिंहस्थ महापर्व की तैयारियों के अंतर्गत 'नमामि क्षिप्रे परियोजना' के तहत घाट निर्माण एवं अन्य कार्यों का वर्चुअल भूमि-पूजन करेंगे। क्षिप्रा नदी पर 778.91 करोड़ रुपए की लागत वाले ये निर्माण कार्य धार, उज्जैन, इंदौर और देवास जिले के हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी 83.39 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित होने वाले बैराज/स्टॉप डैम/वेटेड कॉजवे का भी भूमि-पूजन करेंगे। साथ ही कालियादेह स्टॉप डैम के 1.39 करोड़ रूपए लागत के मरम्मत कार्य भी शुरू होंगे।

जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने बताया कि क्षिप्रा नदी के दोनों किनारों पर शनि मंदिर से नागदा बाईपास तक कुल 29.21 किलोमीटर लम्बाई में घाट निर्माण कार्य किया जाएगा। घाटों पर श्रद्धालुओं के स्नान के लिये आवश्यक जल स्तर और आवागमन बनाए रखने के लिये वेटेड कॉजवे का निर्माण किया जाएगा। सिंहस्थ-2028 को ध्यान में रखते हुए क्षिप्रा नदी को अविरल एवं प्रवाहमान बनाए रखने के लिये क्षिप्रा नदी पर बैराज का निर्माण एवं स्टॉप डैम का मरम्मत कार्य भी किया जाएगा।

बैराज/स्टॉप डैम/वेटेड कॉजवे निर्माण

मंत्री सिलावट ने बताया कि क्षिप्रा नदी पर जल संसाधन विभाग देवास द्वारा 2.53 करोड़ रुपए की लागत से गाजनोद खेडा बैराज ,3.23 करोड़ रूपए की लागत से दखनाखेड़ी बैराज, 3.15 करोड़ रूपए की लागत से पटाड़ा बैराज कम कॉजवे, 3.79 करोड़ रुपए की लागत से रनायर बैराज, 4.73 करोड रुपए की लागत से टिगरियागोगा बैराज, 6.74 करोड रूपए की लागत से सिरोंज बैराज कम कॉजवे और 2.57 करोड़ रूपए की लागत से बरोदपिपलिया बैराज का निर्माण किया जाएगा। नमामि क्षिप्रे परियोजना इकाई उज्जैन के द्वारा क्षिप्रा नदी पर 8.71 करोड़ रुपए की लागत से किड्डेदाराव स्टॉप डैम तथा कान्ह नदी पर 5.74 करोड़ रुपए की लागत से पंथपिपलई स्टॉप डैम, 4.56 करोड़ रुपए की लागत से जमालपुरा स्टॉप डैम, 6.24 करोड़ रूपए की लागत से गोठड़ा स्टॉप डैम, 5.06 करोड़ रूपए की लागत से पिपलियाराघौ क्रमांक 02 बैराज और 6.34 करोड़ रूपए की लागत से रामवासा क्रमांक 02 बैराज का निर्माण किया जाएगा।

जल संसाधन विभाग इंदौर द्वारा 2.69 करोड़ रुपए की लागत से ब्राम्हणपिपलिया स्टॉप डैम, 2.64 करोड़ रुपए की लागत से दर्जीकराड़िया स्टॉप डैम, 1.96 करोड़ रूपए की लागत से कुडाना स्टॉप डैम, 3.43 करोड़ रूपए की लागत से कायस्थखेड़ी स्टॉप डैम, 4.32 करोड़ रूपए की लागत से साहदा स्टॉप डैम, 0.53 करोड़ रूपए की लागत से लालखेडी स्टॉप डैम मरम्मत कार्य और 4.43 करोड़ रुपए की लागत से मेलकलमा बैराज सहपुलिया का निर्माण किया जाएगा। इसके अलावा नगर पालिका निगम उज्जैन द्वारा 1.39 करोड़ रुपए की लागत से कालियादेह स्टाप डैम का मरम्मत कार्य किया जाएगा। कान्ह नदी पर उज्जैन जिले में 5 बैराज एवं इंदौर जिले में 6 बैराज, इस प्रकार कुल 11 वैराजों का निर्माण किया जाएगा।

जल बचायें, क्योंकि जल की हर बूंद में समाया है जीवन : सीएम डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने शीतलदास की बगिया में घाटों की सफाई की, सफाई मित्रों को किया सम्मानित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मंगलवार की सुबह भोपाल शहर स्थित शीतलदास की बगिया पहुंचे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत बड़े तालाब के घाटों की सफाई में सेवा कार्य (श्रमदान) किया और सफाई मित्रों का सम्मान किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां घाटों की सफाई की। मुख्यमंत्री ने सफाई नौका में बैठकर सफाई कर्मियों से चर्चा की और उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने नागरिकों से जल संरक्षण की दिशा में सक्रिय स्तर पर पानी बचाने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि जल है तो कल है, यह पुण्य भावना प्रदेश के हर नागरिक के मन में होनी ही चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सफाई मित्रों को सफाई दूत निरुपित करते हुए कहा कि स्वच्छता केवल एक औपचारिक अभियान नहीं, बल्कि हमारे जीवन की शैली का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए। जहां स्वच्छता होती है, वहीं लक्ष्मी का वास होता है। उन्होंने नागरिकों से कहा कि अपने घर, आस-पड़ोस और सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं।

भागीदारी निभाने की आत्मीय अपील भी की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी नागरिकों से आव्हान किया कि हर संभव तरीके से जल बचाईये, क्योंकि जल की हर बूंद में जीवन है, अमृत है। इसकी हर बूंद में हमारा सुनहरा भविष्य समाया है। जल बचाना हमारी आज की जरूरत भी है और बेहतर कल के लिए जिम्मेदारी भी। आज जल बचेगा, तभी हमारा कल सुरक्षित होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल संरक्षण के लिए सभी संभव उपाय किये जायें। जल बचाना सिर्फ सरकार की ही क्यूं, पूरे समाज, हर वर्ग, हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। आज जल सहजेंगे, तभी तो हमारा आने वाला कल संवरेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के सभी जल स्रोतों के संरक्षण, पुनर्जीवन और सतत उपयोग के लिए लगातार योजनाबद्ध तरीके से काम कर रही है। जल गंगा संवर्धन अभियान इसी दिशा में एक ठोस कदम है, जिसके तहत पुरानी बावड़ियों, कुंओं, तालाबों, सरोवरों और अन्य परम्परागत जल स्रोतों का जीर्णोद्धार एवं पुनर्विकास किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सभी अपने-अपने

बड़े बाग की पुरानी बावड़ी

नगर निगम भोपाल के जोन क्रमांक 05 वार्ड क्रमांक 09 में स्थित जल संरचनाओं में बड़े बाग की बावड़ी का महत्वपूर्ण स्थान है। बावड़ी का निर्माण लगभग 200 वर्ष पूर्व किया गया था। बावड़ी तीन मंजिला है, इसकी दीवार सीढियों और मुंडेर से लेकर मेहराब तक बेल पत्तियां बनी है। नगर निगम आयुक्त ने बताया कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत नगर निगम भोपाल द्वारा इस बावड़ी से प्लास्टिक वेस्ट, फ्लोटिंग पदार्थ एवं लगभग 40 क्यूबिक मीटर सिल्ट निकाली गयी। बावड़ी की दीवारों से नुकसानदेह खरपतवार को अलग किया गया, जिससे बावड़ी की आवक क्षमता 2000 लीटर प्रति घंटा हो गयी है। वर्तमान में इसके जल का उपयोग निस्तार कार्यों में हो रहा है। बावड़ी में दीवारों एवं सीढ़ियों की मरम्मत कर इनकी रंगाई-पुताई, फ्लेग स्टोन बिछाने एवं लोहे की जाली (फेब्रीकेशन) लगाने का कार्य भी किया गया है।

बड़ा बाग की पुरानी बावड़ी के जीर्णोद्धार कार्य का अवलोकन भी किया

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शीतलदास की बगिया से बड़ा बाग स्थित ऐतिहासिक पुरानी बावड़ी पहुंचें और वहां जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत नगर निगम भोपाल द्वारा कराए जा चल रहे जीर्णोद्धार कार्यों का अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राज्य सरकार विरासत से विकास की सोच के साथ आगे बढ़ रही है और पुरानी विरासतों के संरक्षण को प्राथमिकता दे रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने जल संरक्षण के लिए अद्भुत व्यवस्थाएं बनाई थीं। आज जरूरत है कि हम उन ऐतिहासिक जल स्रोतों का पुनर्जीवन करें और उन्हें अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी संजोकर रखें। उन्होंने सभी नागरिकों से जल संरक्षण में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान में सबकी सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि बावड़ी का जीर्णोद्धार कार्य पूरी गुणवत्ता और समय-सीमा के साथ पूर्ण किए जाएं।

इस दौरान लोकसभा सांसद श्री आलोक शर्मा, विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, विधायक श्री भगवान दास सबनानी, महापौर श्रीमती मालती राय, नगर निगम सभापति श्री किशन सूर्यवंशी, कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, नगर निगम आयुक्त, अन्य अधिकारी, स्थानीय जनप्रतिनिधि, समाजसेवी और बड़ी संख्या में नागरिकगण उपस्थित थे।

बाइक चोरी कर जंगलों में छिपाते थे आरोपी

भोपाल में गिरोह का पर्दाफाश, पुलिस ने बरामद कीं 15 मोटरसाइकिलें

भोपाल (नप्र)। भोपाल पुलिस ने वाहन चोर गिरोह के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए दो शातिर चोरों को गिरफ्तार किया है। निशातपुरा थाना पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 15 चोरी की मोटरसाइकिलें बरामद की हैं, जिन्हें वे भोपाल से चुराकर विदिशा जिले के गांवों और जंगलों में छिपाकर रखते थे।

गिरफ्तार आरोपियों की पहचान जाहिद खान (निवासी ग्राम दानमढ़ी, थाना त्योंदा, जिला विदिशा) और शिवराज अहिरवार (निवासी ग्राम पेशीयां, थाना शमशाबाद, जिला विदिशा) के रूप में हुई है। दोनों की उम्र 23 से 27 वर्ष के बीच है और इन पर भोपाल, विदिशा और राजगढ़ जिलों में दर्जनों वाहन चोरी के केस दर्ज हैं।

करोंद सब्जी मंडी से गिरफ्तारी

पुलिस को सूचना मिली थी कि करोंद सब्जी मंडी इलाके में दो युवक बिना नंबर की बाइक पर संदिग्ध हालात में घूम रहे हैं। थाना प्रभारी रूपेश दुबे ने तत्काल एक टीम गठित कर इलाके में घेराबंदी करवाई। पुलिस टीम में निशातपुरा थाना, डायल 100 और सब्जी मंडी चौकी के जवान शामिल थे। जांच के दौरान दोनों युवकों को पकड़ लिया गया।

जब उनसे बाइक के दस्तावेज मांगे गए तो वे कोई वैध कागज नहीं दिखा सके। पुलिस ने इंजन और चेसिस नंबर से जांच की तो पुष्टि हुई कि बाइक चोरी की है। कड़ी पूछताछ में दोनों ने कबूल किया कि उन्होंने यह बाइक करोंद जेल रोड से चोरी की थी।

15 बाइक चोरी करने का कबूलनामा

पूछताछ में आरोपियों ने भोपाल के निशातपुरा, पिपलानी, टीला जमालपुरा, गौतम नगर, सुखी सेवनिया, कोलार रोड, अशोका गार्डन और ईटखेड़ी थाना क्षेत्रों से कुल 15 बाइक चोरी करने की बात स्वीकारी। पुलिस ने उनकी निशानदेही पर शमशाबाद थाना क्षेत्र के जंगलों से 6 बाइक और थाना त्योंदा क्षेत्र स्थित जाहिद के घर से 8 बाइक बरामद कीं।

शिवराज अहिरवार के खिलाफ अकेले 17 वाहन चोरी के मामले दर्ज हैं, जबकि जाहिद खान के खिलाफ 9 से अधिक केस हैं। पुलिस का मानना है कि दोनों काफी समय से एक संगठित नेटवर्क के जरिए चोरी की बाइकें बेचने में सक्रिय थे। पूरी कार्रवाई में जफरूल हसन, राकेश जोशी, मोहन श्रेष्ठ, मुकेश भारती सहित 18 पुलिसकर्मियों की टीम ने अहम भूमिका निभाई।

मैनिट भोपाल की रिसर्च में खुलासा

• एमपी में 4 दशकों में हीट वेव का खतरा 50 प्रतिशत बढ़ा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (मैनिट) के विस्तृत रिसर्च ने प्रदेश की गर्मी की गंभीरता को लेकर चौंकाने वाले तथ्य उजागर किए हैं। जिसके अनुसार साल 1980-90 के बीच 120 दीन हीट वेव (लू) चली। जो चार दशक पर बाद साल 2013 से साल 2024 में 50 प्रतिशत बढ़कर 180 दिन तक दर्ज की गई। वहीं इसी समय काल में नो डिस्कम्फर्ट यानी बिना असुविधा वाले दिन 83 से घटकर 48 रह गए। इसकी प्रमुख वजह तेजी से होते शहरीकरण को बताया गया है।

इस रिसर्च को प्रमुख प्रस्तुतकर्ता डॉ. विकास पूनिया और थीसिस तैयार करने वाले एमटेक के छात्र हिमांशु झारिया ने किया। इन्होंने मध्यप्रदेश के 7 शहरों भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, सागर, उज्जैन और सतना के साल 1980 से 2024 तक की गर्मी और हीट वेव से जुड़े आंकड़ों का अध्ययन किया। जिसके बाद यह तथ्य सामने आए हैं। डॉ. पूनिया के अनुसार, प्रदेश में भोपाल और इंदौर दो शहर हैं, जहां

अर्बन हीट आइलैंड इफेक्ट देखा जा रहा है। यानी जब शहरीकरण तेजी से बढ़ता है तो हरियाली कम होती है। इससे उस क्षेत्र में गर्मी का असर बढ़ता है। चारों ओर कॉन्क्रीट होने पर हीट एक दायरे में कैद हो जाती है और हीट आइलैंड बन जाता है।

सबसे अधिक खतरा मध्य प्रदेश में- डॉ. विकास पूनिया ने बताया कि शहरी इलाकों में जनसंख्या घनत्व, सीमेंट की संरचनाएं और हरियाली की कमी के कारण अर्बन हीट आइलैंड इफेक्ट बना है। जिससे गर्मी और भी ज्यादा महसूस होती है। साल 2025 में 11 मार्च से 24 अप्रैल तक मध्य प्रदेश में हीट वेव 25 दिन दर्ज हुई। इतने ही दिन हीट वेव राजस्थान में देखी गई। यह देश में सर्वाधिक है।

हीट वेव के कुछ प्रमुख दुष्प्रभाव

निर्जलीकरण- अत्यधिक पसीना आने से शरीर में पानी और जरूरी खनिजों (इलेक्ट्रोलाइट्स) की कमी हो जाती है। इससे कमजोरी और चक्कर लक्षण दिखते हैं।

हीट एग्जॉस्टेशन- यह डिहाइड्रेशन का गंभीर रूप है, जिसमें बहुत ज्यादा पसीना आता है, त्वचा ठंडी और चिपचिप महसूस होती है, मतली, उल्टी, सिरदर्द, कमज़ोरी और मांसपेशियों में ऐंठन हो सकती है।

लू लगना- यह हीट वेव का सबसे खतरनाक असर है और यह जानलेवा हो सकता है। इसमें शरीर का तापमान 104एफ (40एफ या उससे अधिक हो जाता है, त्वचा गरम और सूखी या बहुत ज्यादा पसीने से लथपथ हो सकती है। भ्रम, बेहोशी, दौरे पड़ना और यहां तक कि कोमा भी हो सकता है। यह एक मेडिकल इमरजेंसी है।

मांसपेशियों में ऐंठन- पसीने के जरिए शरीर से नमक और पानी की कमी होने पर मांसपेशियों में दर्दनाक ऐंठन हो सकती है, खासकर पैरों, बाजुओं और पेट में।

थकान और कमजोरी- लगातार गर्मी के कारण शरीर थका हुआ और सुस्त महसूस करता है, जिससे सामान्य काम करने की क्षमता कम हो जाती है।

ऐसी रिसर्च जरूरी

डॉ. पूनिया के अनुसार, भारत में 2024 की गर्मियों में हीट स्ट्रोक के 40,000 से अधिक मामले दर्ज किए गए। 2050 तक हर क्षेत्र में हीट वेव की गंभीरता और अवधि दोनों बढ़ने की संभावना है। यह रिसर्च न सिर्फ चेतावनी है, बल्कि नीति निर्माताओं के लिए एक मार्गदर्शक भी है कि कैसे शहरों को हीट वेव से बचाने की तैयारी की जाए।

क्या हो सकते हैं उपाय?

- शहरों में ग्रीन कवर बढ़ाना
- समय रहते पूर्वानुमान के लिए एडवांस एआई आधारित मॉडल तैयार करना
- शहर-वार हीट एक्शन प्लान बनाना
- स्कूल और अस्पताल जैसे संवेदनशील स्थलों पर कूलिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर को अपनाना

संपादकीय

लालू परिवार की अग्नि परीक्षा

बिहार में राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के बड़े बेटे तेजस्वी यादव द्वारा खुद अपने विवाहेत्तर सम्बंधों के खुलासे के बाद राज्य की राजनीति में भूचाल आ गया है। इस खुलासे के बाद जहां एक तरफ स्वयं को शर्मिंदा महसूस कर रहे लालू परिवार ने अपने बेटे को पार्टी से 6 साल के लिए निष्कासित कर दिया है तो दूसरी तरफ भाजपा सहित सभी विपक्षी दलों ने लालू प्रसाद यादव की नैतिकता को लेकर हल्ला बोल दिया है। लालू यादव ने कहा कि उन्होंने लोक लाज और नैतिकता की खातिर बेटे के अवैध सम्बंधों को सिरे से खारिज कर उसे पार्टी से निकाल दिया है। जबकि राजनीतिक प्रेक्षकों की नजर में लालू परिवार का पॉलीटिकल डेमेज कंट्रोल है, क्योंकि बिहार छह माह बाद विधानसभा चुनाव होने हैं। लालू परिवार के लिए यह अग्नि परीक्षा का समय है। जबकि विपक्ष को लालू यादव और उनके परिवार तथा राजद पर हमला बोलने का मुद्दा बैठे बिठाए मिल गया है। सत्तारूढ़ दल के नेताओं का कहना है कि इस प्रकरण से लालू परिवार की नैतिकता बेनकाब हो गई है। क्योंकि उन्होंने तेजप्रताप के अन्य युवती से सम्बंध होने की जानकारी होते हुए भी एक प्रतिष्ठित यादव परिवार के बेटी ऐश्वर्या से उसकी शादी करा दी। शादी के कुछ समय बाद ही ससुराल में ऐश्वर्या को प्रताड़ित किया जाने लगा। बकौल ऐश्वर्या उसके साथ लालू के परिजनों ने मारपीट की और घर से निकाल दिया। लेकिन उस समय भी लालू की संवेदनाएं नहीं जागीं। उल्टे तेजप्रताप को पूर्व की महागठबंधन सरकार में मंत्री बनाया गया। वो पूछ रही है कि मुझे न्याय कब मिलेगा। इस पूरे प्रकरण में यादवों का त्रिकोण है। तेजप्रताप यादव पर आरोप है कि उनका प्रेम प्रकरण किसी अनुष्का यादव से चल रहा है। तेजप्रताप ने अनुष्का के साथ अपनी फोटो भी वायरल की है। लेकिन अभी तक अनुष्का का खुलासा नहीं हो पाया है कि वह है कौन? बताया जाता है कि वह तेजप्रताप के किसी दोस्त की बहन है। इस पूरे मामले में अनुष्का अभी तक सामने नहीं आई है। तीसरा कोण तेजप्रताप की पत्नी ऐश्वर्या है, जिसने लालू परिवार पर सीधा हमला किया है। यहां दिक्कत उन यादव वोटरों के साथ है कि वो किसकी बात सही मानें। यहां सवाल यह भी है कि अगर लालू परिवार को तेजप्रताप के दूसरी लड़की के साथ रिश्ते की जानकारी थी तो उन्होंने तेजप्रताप की शादी ऐश्वर्या से क्यों कराई, क्यों उसका जीवन बर्बाद किया? तेजप्रताप ने कोर्ट में ऐश्वर्या से तलाक का मामला लगा रखा है। इस पर फैसला आना बाकी है, जबकि ऐश्वर्या अपने मायके में ही रह रही है। इस बीच तेजप्रताप का भी कोई पता नहीं है। उसने पहले सोशल मीडिया पर अनुष्का के साथ अपना फोटो पोस्ट किया, जब हल्ला मचा तो उसे डिलीट कर कहा कि मेरा सोशल मीडिया अकाउंट हैक कर गया था। लेकिन ये बेकार की बातें है। तेजप्रताप ने पिछले विस चुनाव में शिकारपुरा से राजद के टिकट पर विधायक का चुनाव जीता था। अब पार्टी से निकाले जाने के बाद वो क्या करते हैं, यह देखने की बात है। क्या वो निर्दलीय चुनाव लड़ेंगे या अपनी नई पार्टी खड़ी करेंगे? अगर नई पार्टी बनाई तो सबसे ज्यादा नुकसान लालू की पार्टी राजद को ही होगा। वैसे तेजप्रताप अपनी 'ऊलजलूल हरकतों के लिए बदनाम हैं। वो क्या करेंगे, कोई नहीं जानता। लेकिन सत्तारूढ़ एनडीए के हाथ में लिए उन्होने ऐसा मुद्दा दे दिया है, जिसकी अनुगूंज आगामी विस सभा चुनाव में जरूर होगी। चुनाव नतीजे बताएंगे कि तेजप्रताप के कारनामे और उन्हें पार्टी से निष्कासित करने का फैसला लालू की पार्टी के लिए सफल राजनीतिक चाल होगी या फिर सेल्फ गोल?

आईएमएफ की सत्ता-संरचना और भारत की अनसुनी आवाज़

नज़रिया

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

2019 की बात करें तो जब भारत में पुलवामा आतंकवादी हमले के बाद संपूर्ण देश आक्रोशित था, उसी समय आईएमएफ ने पाकिस्तान को 6 बिलियन डॉलर का राहत पैकेज स्वीकृत किया, जबकि वह एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में आतंकवादी वित्तपोषण के आरोप में दर्ज था। यह एक ऐसा क्षण था जब भारत को उम्मीद थी कि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं आतंकवाद को प्रश्रय देने वाले देशों के प्रति कठोर रुख अपनाएँगी, लेकिन इसके विपरीत वैश्विक वित्तीय संस्थाओं ने पाकिस्तान की कमजोर विदेशी मुद्रा स्थिति को प्राथमिकता दी और आतंकवाद से जुड़ी नैतिक वास्तविकता को नजरअंदाज कर दिया। यह उस दोहरे मानदंड का एक ज्वलंत उदाहरण था, जहाँ भू-राजनीतिक समीकरण नैतिक स्पष्टता पर भारी पड़ते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की स्थापना 1944 के ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में हुई थी, एक ऐसे समय में जब द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका ने वैश्विक आर्थिक ढांचे को पूरी तरह से चरमरा दिया था। तब इसकी कल्पना एक ऐसे वित्तीय संस्थान के रूप में की गई थी जो देशों को आर्थिक संकट से उबारने और वैश्विक आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में सहायक हो। परंतु विडंबना यह है कि जिस संस्था का जन्म वैश्विक सहयोग और निष्पक्षता की भावना से हुआ था, आज वही संस्था एक राजनीतिक संतुलन और पश्चिमी देशों की शक्ति के यंत्र में परिवर्तित होती जा रही है। भारत का हालिया आईएमएफ वोट से सार्वजनिक रूप से परहेज़ करना, इस संस्थागत विसंगति की ओर स्पष्ट संकेत करता है, जो अब केवल एक देश की प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि उभरती अर्थव्यवस्थाओं की गहरी असंतुष्टि का प्रतिबिंब है।

2019 की बात करें तो जब भारत में पुलवामा आतंकवादी हमले के बाद संपूर्ण देश आक्रोशित था, उसी समय आईएमएफ ने पाकिस्तान को 6 बिलियन डॉलर का राहत पैकेज स्वीकृत किया, जबकि वह एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में आतंकवादी वित्तपोषण के आरोप में दर्ज था। यह एक ऐसा क्षण था जब भारत को उम्मीद थी कि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं आतंकवाद को प्रश्रय देने वाले देशों के प्रति कठोर रुख अपनाएँगी, लेकिन इसके विपरीत वैश्विक वित्तीय संस्थाओं ने पाकिस्तान की कमजोर विदेशी मुद्रा स्थिति को प्राथमिकता दी और आतंकवाद से जुड़ी नैतिक वास्तविकता को नजरअंदाज कर दिया। यह उस दोहरे मानदंड का एक ज्वलंत उदाहरण था, जहाँ भू-राजनीतिक समीकरण नैतिक स्पष्टता पर भारी पड़ते हैं।

इतिहास ने एक बार फिर खुद को दोहराया है। पिछले सप्ताह पाकिस्तान को दिए गए 2.4 बिलियन डॉलर के ऋण पर भारत का परोक्ष विरोध यही संकेत देता है कि अब भारत जैसे देश इन वैश्विक संस्थाओं की पारदर्शिता और निष्पक्षता पर विश्वास खो रहे हैं। भारत की चिंता यह है कि पाकिस्तान आईएमएफ से प्राप्त संसाधनों का उपयोग भारत विरोधी गतिविधियों में कर सकता है। लेकिन यह केवल भारत-पाक मसला नहीं है, यह उस गहरे संस्थागत दोष की ओर इशारा करता है जिसमें आईएमएफ अब भी उस शक्ति-संरचना के अनुसार कार्य करता है जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अस्तित्व में आई थी, और जिसमें उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं की आवाज को बार-बार अनदेखा किया जाता है।

बोस्टन विश्वविद्यालय के ग्लोबल डिवेलपमेंट पॉलिसी सेंटर की हालिया रिपोर्ट में इस असंतुलन को विस्तार से उजागर किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, आज उभरते हुए बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं (EMDEs) वैश्विक जीडीपी का लगभग 60 प्रतिशत उत्पन्न करती हैं, लेकिन इनका आईएमएफ में वोटिंग पावर केवल 40 प्रतिशत है। इसके विपरीत अमेरिका और यूरोपीय देशों का प्रभुत्व असमानुपातिक है। अमेरिका एक 'बेसिक वोट' की अवधारणा भी है, जो सभी सदस्य देशों को समान रूप से दी जाती है। यह व्यवस्था इसलिए बनाई गई थी ताकि कोटा आधारित वोटिंग में संतुलन स्थापित हो सके। लेकिन समय के साथ, जैसे-जैसे सदस्य देशों की संख्या बढ़ी और विकसित देशों के कोटे में वृद्धि हुई, बेसिक वोट का अनुपातिक महत्व घटता गया। हाल के वर्षों में इसमें मामूली वृद्धि की गई है, लेकिन यह अभी भी केवल 5.5 प्रतिशत है, जो संस्थागत असमानता को दूर करने के लिए अपर्याप्त है।

अकेला ही इतना वोटिंग पावर रखता है (लगभग 16.5 प्रतिशत) कि वह आईएमएफ की किसी भी संरचनात्मक सुधार प्रक्रिया को वीटो कर सकता है, क्योंकि महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए 85 प्रतिशत बहुमत आवश्यक होता है।

यह शक्ति असंतुलन केवल एक सांख्यिकीय विसंगति नहीं है, इसके गंभीर राजनैतिक और आर्थिक परिणाम हैं। आईएमएफ का कोटा तंत्र यानी कोटा प्रणाली, एक ऐसी पद्धति है जो किसी देश की अर्थव्यवस्था के आकार, व्यापार की खुलापन दर, विदेशी मुद्रा भंडार और आर्थिक विविधता के आधार पर उसकी स्थिति निर्धारित करती है। लेकिन वर्तमान में उपयोग में लाई जा रही गणना-पद्धति जीडीपी को मार्केट एक्सचेंज रेट पर आधारित करके विकसित देशों को प्राथमिकता देती है, जबकि विकासशील देशों की आर्थिक क्षमता को कम करके आँकती है। यदि जीडीपी को परचेजिंग पॉवर प्रायोरिटी (पीपीपी) के आधार पर मापा जाए तो भारत, इंडोनेशिया और ब्राज़ील जैसे देश कहीं अधिक प्रभावशाली दिखाई देते हैं।

इसके अतिरिक्त, आईएमएफ की वोटिंग प्रणाली में

इस स्थिति में भारत का वोटिंग पावर उसकी वास्तविक आर्थिक स्थिति की तुलना में बहुत कम है। उपर्युक्त रिपोर्ट का अनुमान है कि यदि कोटे का पुनर्संरेखण निष्पक्ष तरीके से किया जाए, तो भारत को 0.9 प्रतिशत अतिरिक्त वोटिंग पावर प्राप्त हो सकता है, जो उसे नीतिगत निर्णयों में अधिक प्रभावशाली बना सकता है। वर्तमान व्यवस्था में, एक देश के वीटो अधिकार के कारण दर्जनों विकासशील देशों की सामूहिक इच्छा अप्रभावी हो जाती है।

2023 में हुई IMF की 16वीं जनरल कोटा समीक्षा एक अवसर था जब इस असंतुलन को सुधारा जा सकता था, लेकिन इसके बजाय केवल कुल कोटा राशि में आनुपातिक वृद्धि की गई, जिससे शक्ति संतुलन जस का तस बना रहा। अब 2025 में प्रस्तावित 17वीं समीक्षा एक और अवसर प्रदान करती है, जहाँ इस व्यवस्था में सार्थक सुधार लाया जा सकता है। इसमें PPP आधारित GDP का अधिक वज़न, आर्थिक खुलापन की परिभाषा में सुधार, और गरीब देशों की भागीदारी को बढ़ावा देना जैसे कदम उठाए जाने की सख्त ज़रूरत है।

भारत आज एक तेजी से उभरती हुई आर्थिक शक्ति है, जिसकी आवाज़ विश्व मंच पर सुनी जाती है। जी 20, ब्रिक्स और एससीओ जैसे मंचों पर भारत की भूमिका सक्रिय और निर्णायक रही है। ऐसे में भारत आईएमएफ जैसे संस्थानों में सुधार की वैश्विक मुहिम का नेतृत्व कर सकता है। यह तर्क दिया जा सकता है कि वोटिंग शक्ति का पुनर्वितरण चीन जैसे देशों को अधिक ताकत देगा और इससे भारत को कोई प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिलेगा। लेकिन यह तर्क नैतिक रूप से अधूरा है। सही निर्णय केवल संभावित परिणामों के आधार पर नहीं, बल्कि सैद्धांतिक न्याय के आधार पर लिए जाने चाहिए।

यहाँ प्रश्न यह नहीं है कि पाकिस्तान को आईएमएफ की सहायता मिलनी चाहिए या नहीं। मूल प्रश्न यह है कि निर्णय किस आधार पर लिया गया? किसकी आवाज़ महत्वपूर्ण मानी गई और किसकी उपेक्षा हुई? जब तक आईएमएफ अपनी संरचना को इस तरह नहीं बदलता कि वह आज की वैश्विक आर्थिक सच्चाईयों को प्रतिबिंबित करे, तब तक वह उन देशों का विश्वास खोता रहेगा जिनकी सहायता के लिए उसका निर्माण हुआ था।

आज जब वैश्विक बहुध्रुवीयता की ओर दुनिया बढ़ रही है, तब ऐसे संस्थानों का निष्पक्ष और लोकतांत्रिक ढांचा अत्यंत आवश्यक हो जाता है। IMF का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि वह अपनी नैतिक दिशा बदलता है या नहीं। यदि यह संस्था समय के साथ नहीं बदली, तो वह केवल एक ऐतिहासिक अवशेष बनकर रह जाएगी, जिसका उपयोग कुछ गिने-चुने देश अपनी सुविधा के अनुसार करेंगे, जबकि शेष विश्व उसकी निष्क्रियता से त्रस्त रहेगा।

अब समय आ गया है कि आईएमएफ के भीतर शक्ति-संतुलन को सुधारा जाए, ताकि भारत जैसे देशों की आवाज़ को वह महत्व मिल सके जिसकी वे वास्तविक हकदार हैं। ऐसा नहीं होने पर न केवल आईएमएफ की वैधता पर प्रश्नचिह्न लगेगा, बल्कि वैश्विक आर्थिक व्यवस्था भी एक गंभीर असंतुलन की ओर अग्रसर होगी, जो अंततः सभी के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। भारत को चाहिए कि वह इस सुधारवादी यात्रा में एक नैतिक और कूटनीतिक नेतृत्व प्रदान करे, ताकि वैश्विक वित्तीय न्याय की स्थापना हो सके।

भारतीय राष्ट्रवाद को नई आँखों से देखिए !

सामयिक

प्रो. संजय द्विवेदी

लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में जनसंचार विभाग के आचार्य और अध्यक्ष हैं।

देश में इन दिनों राष्ट्रवाद चर्चा और बहस के केंद्र में है। ऐसे में यह जरूरी है कि हम भारतीय राष्ट्रवाद पर एक नई दृष्टि से सोचें और जानें कि आखिर भारतीय भावबोध का राष्ट्रवाद क्या है? 'राष्ट्र' सामान्य तौर पर सिर्फ भौगोलिक नहीं बल्कि 'भूगोल-संस्कृति-लोग' के तीन तत्वों से बनने वाली इकाई है। इन तीन तत्वों से बने राष्ट्र में आखिर सबसे महत्वपूर्ण तत्व कौन सा है? जाहिर तौर पर वह 'लोग' ही होगें। इसलिए लोगों की बेहतरी, भलाई, मानवता का स्पंदन ही किसी राष्ट्रवाद का सबसे प्रमुख तत्व होना चाहिए।

जब हम लोगों की बात करते हैं तो भौगोलिक इकाईयां टूटती हैं। अध्यात्म के नजरिए से पूरी दुनिया के मनुष्य एक हैं। सभी संत, आध्यात्मिक नेता और मनोवैज्ञानिक भी यह मानने हैं कि पूरी दुनिया पर मनुष्यता एक खास भावबोध से बंधी हुयी है। यही वैश्विक अचेतन (कलेक्टिव अनकांशेसनेस) हम-सबके एक होने का कारण है। स्वामी विवेकानंद इसी बात को कहते थे कि इस अर्थ में भारत एक जड़ भौगोलिक इकाई नहीं है। बल्कि वह एक चेतन भौगोलिक इकाई है जो सीमाओं और सैन्य बलों पर ही केंद्रित नहीं है। भारतीय राष्ट्रवाद मनुष्य के विस्तार व विकास पर केंद्रित है। जिसे भारत ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' कहकर संबोधित किया। यह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' राजनीतिक सत्ता का उच्चार नहीं है। उपनिषद् का उच्चार है। सारी दुनिया के लोग एक परिवार, एक कुटुम्ब के हैं, इसे समझना ही दरअसल भारतीय राष्ट्रवाद को समझना है। यह राष्ट्रवाद मनुष्य की सांस्कृतिक एकता के विस्तार का प्रतीक है और हमारे सांस्कृतिक मूल्य, मानववादी सांस्कृतिक मूल्यों पर केंद्रित है। हमारी भारतीय अवधारणा में राज्य निर्मित भौगोलिक-प्रशासनिक इकाईयां प्रमुख स्थान नहीं रखतीं बल्कि हमारी चेतना, संस्कृति, मूल्य आधारित जीवन और परंपराएं ही यहां हमें राष्ट्र बनाती हैं। हमारे सांस्कृतिक इतिहास की ओर देखें तो आर्यावर्त की सीमाएं कहां से कहां तक विस्तृत हैं, जबकि सच यह है कि इस पूरे भूगोल पर राज्य बहुत से थे, राजा अनेक थे- किंतु हमारा सांस्कृतिक अवचेतन हमें एक राष्ट्र का अनुभव कराता था। एक ऐतिहासिक सत्य यह भी यह है कि हमारा राष्ट्रवाद दरअसल राज्य संचालित नहीं था, वह समाज और बौद्धिक चेतना से संपन्न संतों, ऋषियों द्वारा संचालित था। वह राष्ट्रवाद इस व्यापक भूगोल की चेतना में समाया हुआ था। यहां का ज्ञान विस्तार जिस तरह चारों दिशाओं में हुआ,वह बात हैरत में डालती है। राजा सिर्फ राज्य बनाते हैं,ऋषि अपने सांस्कृतिक अवदान से राष्ट्र बनाते हैं।

आप देखें तो बुद्ध पूरी दुनिया में अपने संदेश को यूं ही नहीं फैला पाए, बल्कि उस ज्ञान में एक ऐसा नवाचार,नवचेतन था जिसे दुनिया ने स्वतः आगे बढ़कर ग्रहण किया। भारत कई मायनों में अध्यात्म और चेतना की भूमि है, सच कहें तो दुनिया की तमाम स्थितियों से भारत एक अलग स्थिति इसलिए पाता है, क्योंकि यह भूमि संतों के लिए, ज्ञानियों के लिए उर्वर भूमि है। दुनिया के तमाम विचारों की सांस्कृतिक चेतना जड़वादी है, जबकि भारत की चेतना जैविक है। इसलिए भारत मरता नहीं है, क्योंकि वह जड़वादी और हठवादी नहीं है। यहां का मनुष्य सांस्कृतिक एकता के लिए तो खड़ा होता है पर विचारों में जड़ता आते ही उससे अलग हो जाता है। हमारा ईश्वर आंतरिक उन्नयन और पाप क्षय के लिए काम करता है। हमारे संत भी आध्यात्मिक उन्नयन और पापों के क्षय के लिए काम करते हैं। मनुष्य की चेतना का आत्मिक विस्तार ही इस राष्ट्रवाद लक्ष्य है। इसलिए यह सिर्फ एक खास भूगोल, एक खास विचारधारा और पूजा पध्दति में बंधे लोगों के उद्धार के लिए नहीं, बल्कि समूची मानवता की मुक्ति के काम करने वाला यह विचार है। यहां मानव की मुक्ति ही उसका लक्ष्य है। यह राष्ट्रवाद सैन्यबल और व्यापार बल से चालित नहीं है, बल्कि यह चेतना के विस्तार, उसके व्यापक भावबोध और मनुष्य मात्र की मुक्ति का विचार से अनुप्राणित है।

भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवाद को समझना वास्तव में मानवतावाद के व्यापक परिप्रेक्ष्य को समझना है। यह विचार कहता है- 'संतों को सीकरी से क्या काम' और फिर कहता है 'कोई नृप होय हमें क्या हानि'। इस मायने में हम राज या राज्य पर निर्भर रहने वाले समाज नहीं थे। राजा या राज्य एक व्यवस्था थी, किंतु जीवन मुक्त था-मूल्यों पर आधारित था। पूरी सांस्कृतिक परंपरा में समाज ज्यादा ताकतवर था और स्वाभिमान के साथ उदार मानवतावाद और एकात्म मानवदर्शन पर आधारित जीवन जीता था। वह चीजों को खंड-खंड करके देखने का अभ्यासी नहीं था। इसलिए इस राष्ट्रवाद में जो समाज बना, वह राजा केंद्रित नहीं, संस्कृति केंद्रित समाज था। जिसे अपने होने-जीने की शर्तें पता थीं, उसे उसके कर्तव्य ज्ञात थे। उसे राज्य की सीमाएं भी पता थीं और अपनी मुक्ति के मार्ग भी पता थे। इस समाज में गुणता की स्पर्धा थी- इसलिए वह एक सुखी और संपन्न समाज था। इस समाज में भी बाजार था, किंतु समाज- बाजार के मूल्यों पर आधारित नहीं था। आनंद की सरिता पूरे समाज में बहती थी और आध्यात्मिकता के मूल्य जीवन में रसपगे थे। भारतीय समाज जीवन अपनी सहिष्णुता के नाते समरसता के मूल्यों का पोषक है। इसीलिए तमाम धाराएं,विचार,वाद और पंथ इस देश की हवा-मिट्टी में आए और अपना पुर्नअविष्कार किया, नया रूप लिया और एकमेक हो गए। भारतीयता हमारे राष्ट्रवाद का अनिवार्य तत्व है। भारतीयता के माने ही है स्वीकार। दूसरों को स्वीकार करना और उन्हें अपनों सा प्यार देना। यह राष्ट्रवाद विविधता को साधने वाला, बहुलता को आदर देने वाला और समाज को सुख देने वाला है। इसी नाते भारत का विचार आक्रामकता का, आक्रमण का, हिंसा या अधिनायकवाद का विचार नहीं है। यह श्रेष्ठता को आदर देने वाली,विद्वानों और त्यागी जनों को पूजने वाली संस्कृति है। अपने लोकतत्वों को आदर देना ही यहां राष्ट्रवाद है। इसलिए यहां भूगोल का विस्तार नहीं, मनों और दिलों को जीतने की संस्कृति यहां जगह पाती है।

यहां शांति है, सुख है, आनंद है और वैभव है। यह देकर, छोड़कर और त्यागकर मुक्त होती है। समेटना यहां ज्ञान को है, संपत्ति, जमीन और वैभव को नहीं। इसलिए फकीरी यहां आदर पाती है और सत्ताएं लांछन पाती हैं। इसलिए यहां लोकसत्ता का भी मानवतावादी होना जरूरी है। यहां सत्ता विचारों से, कार्यो से और आचरण से लोकमानस का विचार करती है तो ही सम्मानित होती है। वैसे भी भारतीय समाज एक सत्ता निरपेक्ष समाज है। वह सत्ताओं की परवाह न करने वाला स्वाभिमानी समाज है। इसलिए उसने जीवन की एक अलग शैली विकसित की है, जो उसके राष्ट्रवाद ने उसे दी है। यही स्वाभिमान एक नागरिक का भी है और राष्ट्र का भी। इसलिए वह अपने अध्यात्म के पास जाता है, अपने लोक के पास जाता है और सत्ता या राज्य के चमकीले स्वप्न उसे रास नहीं आते। इसी राष्ट्र तत्व को खोजते हुए राजपुत्र सत्ता को छोड़कर वनों, जंगलों में जाते रहे हैं, ज्ञान की खोज में,सत्य की खोज में, लोक के साथ सातत्य और संवाद के लिए। राम हों, कृष्ण हों, शिव हों, बुद्ध हों, महावीर हों- सब राजपुत्र हैं, संप्रभु हैं और सब राज के साथ समाज को भी साधते हैं और अपनी सार्थकता साबित करते हैं। इसलिए भारतीय जमीन का राष्ट्रवाद एक अलग कथा है, उसे पश्चिमी पैमानों से नापना गलत होगा। आज इस वक्त जब भारतीय राष्ट्रवाद की अनाप-शनाप व्याख्या हो रही है, हमें ठहरकर सोचना होगा कि क्या सच में हममें अपने राष्ट्र की थोड़ी भी समझ बची है?

कभी चल गई, कभी फिसल गई

कटाक्ष

अनिल ठाकुर

लेखक व्यंग्यकार हैं।

कवि शैल चतुर्वेदी ने अपनी प्रसिद्ध हास्य कविता 'चल गई' में वक्त बेवक्त आंख चल जाने से झेली गई दुश्वारियों को बेहतरीन ढंग से बयां किया था। मियां ग़ालिब ने फरमाया था 'इश्क पर जोर नहीं जालिम, ये लगाए न लगे बुझाए ना बुझे।' साहब, आंख और इश्क पर किसका जोर चलता है, दोनों अनजाने में हो जाए तो कोई क्या करें। वैसे आज से पचास साठ साल पहले मजनूओं के आंख चलाने या मारने का बड़ा चलन था, कुछ उच्च कोटी के मजनू आंख के साथ साथ सीटी मारने के भी उस्ताद हुआ करते थे। कोई अकेली दुकेली कन्या कही दिखी नहीं कि भाई लोगों की चल जाती थी। प्रायः ऐसे मजनू कन्या शालाओं या कन्या महाविद्यालयों के पास विचरण करते नजर आते थे। कभी कभी कोई दबंग कन्या अपने सेंडिल की धूल इनके बालों से साफ कर लेती थी। मगर इससे इनकी दिनचर्या में कोई फर्क नहीं पड़ता था दूसरे दिन फिर उसी जगह उसी वक्त हाजिर।

बस इसी तरह इसकी बहन जुबां का भी यही हाल है। आंख चल जाती है तो इस देवी को फिसलने में देर नहीं लगती। अक्सर महिलाओं के लिए जुमला जड़ दिया जाता है कि अरे उसकी जुबान तो कतरनी की तरह चलती है। वे बिना सोचे समझे कही भी कुछ भी बोलकर घमासान मचा देती है। ये देवियां ऐसी होती है कि ना सास बहू को छोड़े, ना बहू सास को। पुराने जमाने में मोहल्ले भर की सास दोपहर में ओटले पर इकट्ठी होकर इसी तरह अपना खाना पचाती थी। बहुओं को भी पनघट या नदी, कुएं से पानी लाते वक्त थोड़ा बहुत मौका मिल जाता था, बुढ़िया की बुराई करने में। पता नहीं कब पिंड छूटेगा बुढ़िया से, नासपीटी ना मरे नी माचा छोड़े। सालों तक हम उन्हें अनपढ़, गंवार कह कर टालते रहे। अब पढ़ी लिखी सास बहू किटी पार्टी में ये शौक पूरा करती है। जब तक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पॉपुलर नहीं था, तब तक जुबां से निकली बात का यह कहकर बचाव होता रहा कि मेरा ये आशय नहीं था, मेरे बयान को तोड़ मरोड़ कर पेश किया गया। जबकि सारे बयान मौका देख, सोच समझकर दिए जाते रहे। अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पहुंच इतनी बढ़ गई है कि आपकी बात शब्दशः रिकॉर्ड हो जाती है, बचने की उम्मीद कम होती है। लेकिन बेशर्मी इस हद तक बढ़ गई है कि यही दोहराया जाता है कि ये भावावेश में दिया था, किसी का दिल दुखाने का मेरा इरादा नहीं था। कुछ बेशर्म ऐसे होते है कि माफी मांगने के बाद भी यह कहते नहीं थकते कि हम डरने वाले नहीं है। कुछ अंग्रेज़ीदां कुछ भी बोलने के बाद यह कह कर अपना बचाव करते है मुझे इसका हिंदी में मतलब पता नहीं था। ये सारे महा बुद्धिजीवी, विदेशों में बरसों गुजारकर मूल धारा से कटे हुए लोग होते है। मगर अपने देशी ठर्रे भी कम नहीं होते है, अखबारों, खबरों में बने रहना इनका शगल होता है। कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा की तर्ज पर मौका मिलते ही किसी से भी किसी का रिश्ता जोड़ कब इनकी जबान फिसल जाए खुद इन्हें पता नहीं होता। ये जानते है नंगे के नौ ग्रह बलवान होते है। इन्हें खुद को नंगा दिखने में कोई शर्म महसूस नहीं होती। जनाब शर्म आपको आ रही हो तो अपनी आँखें बंद क्यों नहीं कर लेते। अब बेचारा शर्मदार तो आंखे बंद कर लेता है लेकिन इनकी बिरादरी के कुछ लोग यह सोचकर कि हमें कम ना आंका जाए, अपने कपड़े उतारने में शर्म महसूस नहीं करते। भीड़ में कौन देखता है कि कौन नंगा है, कौन कपड़े में। इनके हरएक के अपने आका होते हैं, मदारी की तरह, जो इन्हें अपनी उंगलियों पे नचाते रहते है। तो साहब तमाशा जारी है। मजा आ रहा है तो ताली बजाओ, शर्म आ रही है तो आंखे बंद कर लो, मर्जी आपकी। शांततः कोर्ट चालू आहे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्लिक करो, आह भरो

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

लेखक व्यंग्यकार हैं।

गाँव के चौराहे पर डिजिटल इंडिया का रंगीन होर्डिंग लगा था- 'हर हाथ में मोबाइल, हर जेब में इंटरनेट।' बगल में खड़ा रामलाल, जो अब तक मोबाइल को टार्च और गाना सुनने की मशीन समझता था, ठिठक गया। उसे लगा जैसे कोई अलौकिक बात कह दी गई हो। उसके मन में सवाल उमड़ पड़ा - 'ये इंटरनेट का कीड़ा कहाँ से पकड़ते हैं, मास्टरजी?' मास्टरजी मुस्कराए और बोले, 'अब सबकुछ ऑनलाइन है, रामलाल। खेत, खलिहान, राशन, विवाह, मृत्यु प्रमाण पत्र... सब मोबाइल में समा गया है।' रामलाल ने अपने पुराने कीपैड वाले मोबाइल को देखा और बोला, 'हमारे मोबाइल में तो बस सिग्नल ही नहीं आता, इंटरनेट कहाँ से आएगा?' चौराहे की चाय की दुकान पर बैठे लोग हँस पड़े।

रामलाल ने निर्णय लिया- अब उसका बेटा डिजिटल बनेगा। उसे शहर भेजा कि कुछ सीखे, कुछ कमाए। बेटे ने एक साल में कंप्यूटर सीखा, ऑनलाइन फॉर्म भरना सीखा, 'माउस' को हाथी का बच्चा समझना छोड़ दिया। गाँव लौटा तो साथ में था एक लैपटॉप, जो खुद ही चार्ज माँगता रहता था। गाँव में न बिजली, न नेट। जैसे ही खेत में बैठकर उसने किसान योजना का ऑनलाइन फॉर्म भरा, वेबसाइट ने लिखा- 'सर्वर डाउन है। कृपया पुनः प्रयास करें।' रामलाल बोला, 'बेटा, ये सर्वर कौन सी फसल है जो हर बार सूखा मारता है?' बेटे ने सिर पकड़ लिया। गाँव में पहली बार डिजिटल शब्द को लोग अपशब्द की तरह लेने लगे।

गाँव में एक दिन सरकारी जीप आई, डेक से बजता था- 'डिजिटल साक्षरता अभियान में भाग लें।' सबको लगा कि अब सचमुच जादू होगा। सचिव जी बोले, 'अब जमीन के काग़ज़ भी मोबाइल में होंगे।' रामलाल बोला, 'जब जमीन में पानी नहीं, तो मोबाइल में काग़ज़ रखके क्या हल जोतूंगा?' अधिकारी बोला, 'अब ऑनलाइन आवेदन करना होगा।' एक बुज़ुर्ग बोले, 'बेटा, पहले ये बता दो कि आवेदन की बोरी कहाँ मिलती है?' अधिकारी मुस्करा कर बोला, 'बोरी नहीं, वेबसाइट होती है।' भीड़ में खुसर-पुसर शुरू हुई - 'लगता है अब खेती भी बिना हल के होगी, सब मोबाइल से।' डिजिटल इंडिया गाँव में आ गया था, पर गाँव डिजिटल नहीं हो पाया।

रामलाल के मोबाइल पर एक दिन संदेश आया - 'आपके खाते में रू. 6000 की सब्सिडी जमा हुई है।' खुशी के मारे बैंक भागा। बैंक ने कहा- 'आपका खाता आधार से लिंक नहीं है।' रामलाल ने पूछा- 'आधार कौन सी गाय है जो बैंक में दूध नहीं देती?' उसे आधार कार्ड बनवाने भेजा गया, पर केंद्र की मशीनें 'नेटवर्क इश्यू' में थी। तीन दिन की भागदौड़ के बाद भी आधार नहीं बना। बैंक मैनेजर बोला, 'सरकार पैसा भेज रही है, लेकिन आप पकड़ नहीं पा रहे।' रामलाल बोला, 'भैया, मैं किसान हूँ, पैसा नहीं पकड़ता, मिट्टी पकड़ता हूँ।' पूरे गाँव में चर्चा थी- सरकार हमें उड़ाना चाहती है लेकिन पंख नहीं दे रही।

रामलाल को समझ आया- डिजिटल इंडिया केवल विज्ञापन में चमकता है। बेटे से कहा - 'बेटा, गाँव छोड़ो, शहर चलो। वहाँ बिजली, इंटरनेट और शायद इंसान भी होंगे।' शहर में आने पर लगा कि लोग मोबाइल में जी रहे हैं। हर दूसरा व्यक्ति 'मोबाइल झाँककर्मी' बन चुका है। बेटा बोला - 'पिताजी, यहाँ दिल नहीं धड़कते, मोबाइल वाइब्रेट होते हैं।' रामलाल ने कहा-'बेटा, ये शहर तो बिना आत्मा का शरीर है। गाँव की गरीबी बेहतर थी। कम से कम आँखें तो पहचानती थीं।'

एक दिन रामलाल बीमार पड़ गया। अस्पताल गया, डॉक्टर बोला - 'ऑनलाइन अपॉइंटमेंट लो।' रामलाल ने कहा - 'बीमारी मेरे शरीर में है, मोबाइल में नहीं।' डॉक्टर मुस्कराया, 'ये है नया भारत।' जब अपॉइंटमेंट नहीं मिला, तो एक कंपाउंडर बोला - 'साहब, अगर 'कनेक्शन' है तो इलाज हो जाएगा।' रामलाल ने पूछा - 'कौन सा कनेक्शन? बिजली का, पानी का या नेताजी का?' डॉक्टर बोला - 'जो भी चले, इलाज भी वहीं चलेगा।' अस्पताल की दवाई ऑनलाइन थी, लेकिन दर्द ऑफलाइन था।

रामलाल की हालत बिगड़ती गई। बेटे ने कहा - 'पिताजी, गाँव चलिए। शायद वहाँ सुकून मिलेगा।' गाँव में सब बदला हुआ था। चौराहे पर अब बुजुर्ग नहीं बैठते थे, सब मोबाइल में व्यस्त थे। रामलाल की आँखें खोजती रहीं पुराने चेहरों को, लेकिन सब स्क्रीन में समा गए थे। रामलाल बोला- 'बेटा, मुझे वो दुनिया लौटा दे, जहाँ लोग एक-दूसरे को नाम से बुलाते थे, यूजरनेम से नहीं।' पर गाँव अब ऐप बन चुका था, रिश्ते 'लॉगिन' हो गए थे।

आखिरी साँस लेते हुए रामलाल ने कहा - 'बेटा, मुझे माफ करना, मैंने तुझसे डिजिटल होने को कहा था, इंसान बने रहना भूल गया।' बेटे की आँखों में आँसू थे, पर उसके हाथ में मोबाइल था। पिता की चिता जल रही थी, और बेटा इंस्टाग्राम पर 'आरआईपी डैज' लिखकर स्टोरी डाल रहा था। हज़ारों लाइक्स आए, लेकिन कोई कंधा देने नहीं आया। डिजिटल इंडिया में रामलाल अंततः एक पोस्ट बनकर रह गया - जिसे स्क्रॉल करते समय कोई आह भी न करता था।

विचार

भूपेन्द्र भारतीय

लेखक स्तंभकार हैं।

अपनी चुप्पियों को तोड़ते रहें, अभिव्यक्त होते रहें

अभिव्यक्ति सामान्य भाषा में अपनी बात कहना या फिर कुछ बोलना। वहीं कुछ नहीं बोलना मतलब चुप रहना। चुप रहना भी एक अभिव्यक्ति का ही रूप है लेकिन जब जरूरत हो अपनी बात, विचार, सत्य, यथार्थ या किसी घटना को अभिव्यक्ति करना और हम रहे चुप तो वह चुप्पी बहुत भयंकर रोग का रूप ले लेती हैं। अक्सर हर मानव के जीवन में ऐसे हजारों अवसर आते हैं जब उसे चुप रहना पड़ता है लेकिन क्या वह चुप रहना उस मानव व उसके आसपास के परिवेश के लिए शुभ है, यह प्रश्न ही यहां सबसे बड़ा व महत्वपूर्ण है जो चुप्पियों को जन्म देता है।

मानव जीवन की सबसे सुंदर विशेषता है उसे ईश्वर द्वारा मिली अभिव्यक्ति की शक्ति। हाँ अभिव्यक्ति को एक शक्ति ही माना जानी चाहिए। जो भगवान व इस ब्रह्मांड के द्वारा सिर्फ मानव प्राणी को पूर्ण रूप से मिली है। लेकिन क्या हम अभिव्यक्ति की इस शक्ति का सही उपयोग कर पाते हैं ? यह प्रश्न हम जगत से या फिर किसी अन्य व्यक्ति से ना पूछकर स्वयं से ज्यादा पूछे तो अच्छा रहे। अभिव्यक्ति सामान्य भाषा में अपनी बात कहना या फिर कुछ बोलना। वहीं कुछ नहीं बोलना मतलब चुप रहना। चुप रहना भी एक अभिव्यक्ति का ही रूप है लेकिन जब जरूरत हो अपनी बात, विचार, सत्य, यथार्थ या किसी घटना को अभिव्यक्ति करना और हम रहे चुप तो वह चुप्पी बहुत भयंकर रोग का रूप ले लेती हैं। अक्सर हर मानव के जीवन में ऐसे हजारों अवसर आते हैं जब उसे चुप रहना पड़ता है लेकिन क्या वह चुप रहना उस मानव व उसके आसपास के परिवेश के लिए शुभ है, यह प्रश्न ही यहां सबसे बड़ा व महत्वपूर्ण है जो चुप्पियों को जन्म देता है।

ऐसी चुप्पियां हमें भारी नुकसान पहुंचाती है। हमें अंदर से धीरे धीरे तोड़ती जाती है। हमें पल पल कमजोर करती रहती है। आखिर क्या कारण है कि हम चुप्पियों के शिकार हो जाते हैं! इसके कितने ही कारण हो सकते हैं। हम डरते हैं कि मेरे बोलने से कोई बिगाड़ नहीं हो जाए। वह फिर मानव संबंधों का मामला हो या फिर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि से जुड़े मामलें हो। चुप्पियां हमें प्रतिपल दीमक की तरह खाती रहती हैं। प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' का प्रसिद्ध वाक्य 'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?' चुप्पियों को तोड़ने का बल देता है, वहीं यह संदेश भी देता है कि सही बात को बोलना ही चाहिए। भले ही छोटा मोटा बिगाड़ हो जाए। सत्य कभी भी छिपाया नहीं जा सकता है। लाख कोशिशों के बाद भी। एक न एक दिन कितनी भी बड़ी चुप्पी हो उसे तोड़ना ही पड़ता है, नहीं तो वह चुप्पी आपको तोड़ देगी। आपका जीवन नष्ट कर देगी। आपकी चुप्पी के कारण महाभारत तक हो सकता है। धर्मराज युधिष्ठिर ने अपनी माता कुंती को महाभारत युद्ध के बाद यही तो कहा था कि माता, कर्ण से जुड़ा सत्य आपने छुपाकर बहुत बड़ी गलती कर दी। आपकी इस एक चुप्पी ने कितना बड़ा विनाश कर दिया!' आखिर हम क्यों किसी बात को लेकर चुप हो जाते हैं या फिर अपने अंदर उसे दबाकर घुटते रहते है। हम सब जानते हैं कि सामान्यतः उत्साह व खुशी की बात को कोई नहीं छुपाता है। उसे जल्दी से जल्दी व सबसे पहले कहते हैं। लेकिन फिर छुपाते क्या है ? ऐसी बातें जो हमारी गलती या फिर झूठ से जुड़ी है। वह फिर कटु सत्य से भी जुड़ा हो सकता है। अक्सर मानव सत्य बोलने से डरता है।

उसके सत्य से किसी को बुरा लग सकता है। वह अपने संबंधों को बिगाड़ना नहीं चाहता। किसी को नाराज नहीं करना चाहता। क्यों सत्य डरावना या फिर बुरा होता है? नहीं सत्य तो ईश्वर का सबसे सुंदर व पवित्र रूप है लेकिन हम उसे देख नहीं पाते। इसी सत्य की शक्ति के स्वरूप हजारीप्रसाद द्विवेदी अपने प्रसिद्ध उपन्यास बाणभट्ट की आत्मकथा' में लिखते हैं..

सत्य के लिए
किसी से भी न डरना,
गुरु से भी नहीं,
मंत्र से भी नहीं,
लोक से भी नहीं,
वेद से भी नहीं।

हम ध्यान रखें कि सत्य सुविधा या संतुलन नहीं है। सत्य यथार्थ है। ओर यथार्थ से अधिकांश लोग डरते हैं।

बस यह डर ही मानव को बहुतसी बात के लिए विवश करता है कि चुप रहो। यह चुप रहना ही धीरे धीरे चुप्पियों का बड़ा रूप ले लेता है और हमारे अंदर डर का एक मकड़जाल बन जाता है। हम यथार्थ से भागने लगते हैं। हम वर्तमान से भागते हैं। वर्तमान से भागना मतलब भूतकाल में चले जाना या फिर भविष्य की काल्पनिक दुनिया में विचरण करना। हमारे पांव वर्तमान से कट जाते हैं। हम भटक जाते हैं, अपने समय व जीवन से। यथार्थ से नहीं भागना ही निर्भयता है। इसलिए हमारे ग्रंथ,ऋषि मुनि व आचार्य कहते आये हैं कि निर्भय बनो।

चुप्पियां हमें संवादहीनता की ओर भी ले जाती है। जहां संवाद नहीं वहां जीवन व समाज आगे कैसे बढ़ेगा प्रसिद्ध क्रांतिकारी संत तरूणसागर ने अपने अधिकांश प्रवचनों में इस बात को प्रमुखता से कहा है कि समाज, परिवार व संबंधों में कभी में संवाद बंद मत करो। जिस दिन आपने संबंधों में बोलना बंद किया, उस दिन से आपके संबंध धीरे धीरे टुटना शुरू हो जाऐंगे। इसलिए बोलना कभी बंद मत करना।'

वर्तमान में मोबाइल व इंटरनेट जैसे प्रौद्योगिकी विकास ने हमें संवादहीनता की ओर बढ़ाया है। ये संचार व संवाद के अच्छे माध्यम बन सकते है लेकिन इनका गलत उपयोग कर मानव वास्तविक संवाद से दूर होता जा रहा है। छोटी छोटी बातों को लेकर चुप्पियां ओड़ लेना हमारे समाज के प्रमुख स्तंभ विवाह व परिवार को दिनोदिन कमजोर कर रही हैं। परिवार में हम रहते तो है लेकिन वर्तमान में हर कोई मोबाइल व इंटरनेट में व्यस्त हैं। ऐसे में दिनोदिन संवाद की कमी बढ़ती जा रही है। ऐसे में हमारे परिवार व विवाह जैसी पवित्र संस्थाएं टूटने की कगार पर है।

शांत व एकाग्रता से कोई कार्य करना मानव दक्षता है। लेकिन जहां अभिव्यक्ति की जरूरत है वहां चुप रहना कायरता ही होगी। धृतराष्ट्र की भरी सभा में द्रौपदी का चीरहरण ओर उस सभा में विदुर व विकर्ण को छोड़कर बड़े बड़े यौद्धाओं का चुप रहना। क्या कायरता नहीं थी? उनकी चुप्पियों ने अभिव्यक्ति व मानवता को कलंकित किया। उन चुप्पियों ने लाखों जीवन नष्ट कर दिये। इतिहास ऐसी चुप्पियों से भरा पड़ा है। यह मानव जीवन की सुंदरता के खिलाफ है। ईश्वर व प्रकृति ने मानव को बोलने का वरदान दिया, ना कि चुप्पियों के अधीन हो जाने का। चुप्पियां हमें सत्य से दूर करती है। चुप्पियां मानव जीवन के विकास में बाधक है। छोटी छोटी बातों को लेकर मन में पाली जा रही चुप्पियों को हमें तोड़ने रहना चाहिए और अभिव्यक्ति का सही उपयोग करना चाहिए। चुप्पियों को तोड़कर बोला गया सत्य थोड़ा कड़वा जरूर हो सकता है लेकिन वह हमेशा मानव का कल्याण ही करता है।

जनहित

बी.एल. जैन

लेखक वरिष्ठ कर सलाहकार एवं अधिवक्ता है।

जीएसटी अपीलेट ट्रिब्यूनल में अंग्रेजी की अनिवार्यता क्यों?

केन्द्र शासन द्वारा म.प्र. मे जीएसटी अपीलेट ट्रिब्यूनल भोपाल मे स्थापित करने के आदेश जारी किए है। लेकिन अपील से संबंधित सभी दस्तावेज अंग्रेजी मे प्रस्तुत किए जाने की अनिवार्यता की गई है, जो आम करदाता के हित मे नही होकर प्राकृतिक न्याय के भी विपरीत है। हिन्दी हमारी आधिकारिक एवं राष्ट्रभाषा है। आधिकारिक भाषा का प्रयोग सरकारी कामकाज और प्रशासन के लिए किया जाता है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 343 देवनागरी लिपि में हिन्दी और अंग्रेजी को संघ की आधिकारिक भाषाओं के रूप मे निर्दिष्ट करता है। इसके विपरीत जीएसटी अपीलेट ट्रिब्यूनल द्वारा हिन्दी भाषा को दूसरे स्थान का दर्जा देकर इसकी अनदेखी करते हुए अंग्रेजी मे दस्तावेज प्रस्तुति के आदेश हमारी राष्ट्र भाषा की गरिमा और अधिकारों को भी कम करती है।

म.प्र. की स्थिति यह है कि वर्तमान मे कई कर सलाहकारों से लेकर व्यापारी वर्ग तक पूर्णतः अंग्रेजी भाषा के जानकार नही है ऐसी स्थिति में अपीलेट ऑथोरिटी के समक्ष अंग्रेजी की बाध्यता होने के कारण वह अपना पक्ष सही ढंग से प्रस्तुत नही कर सकेगा तो वह न्याय से वंचित रह जाएगा। वर्तमान मे उच्च न्यायालय/आयकर ट्रिब्यूनल/म.प्र. वाणिज्यिक कर अपील बोर्ड के समक्ष जो अपील प्रस्तुत की जाती है वह भी हिन्दी मे प्रस्तुत की जा सकती है तो फिर जीएसटी अपीलेट ट्रिब्यूनल के समक्ष हिन्दी मे अपील क्यों नहीं की जा सकती है? एक ही देश की न्याय व्यवस्था मे हिन्दी एवं अंग्रेजी के नाम पर पृथक-पृथक दो मापदण्ड कैसे अपनाए जा सकते है ? निश्चित ही यह आम करदाता के संवैधानिक अधिकारो हनन है। यहां यह उल्लेखनीय है कि आयकर ट्रिब्यूनल की अधिकृत भाषा अंग्रेजी है लेकिन हिन्दी भाषी राज्यों की स्थिति को मद्देनजर रखते हुए केन्द्र शासन ने आयकर अधिनियम की धारा 255(5) के तहत एक अधिसूचना जारी की है जिसके अनुसार गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पंजाब, म.प्र., राजस्थान, बिहार, केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़, दिल्ली मे हिन्दी भाषा के उपयोग की अनुमति प्रदान की है जहां प्रकरण में

अपील की प्रस्तुति हिन्दी में की जा सकती है यहीं नहीं प्रकरण की प्रोसेडिंग एवं आदेश भी हिन्दी भाषा में जारी किए जा सकते हैं, फिर जीएसटी में अंग्रेजी की बाध्यता क्यों? जब केन्द्र शासन आयकर ट्रिब्यूनल मे हिन्दी भाषा में अपील प्रस्तुति की अनुमति प्रदान कर सकता है तो जीएसटी अपीलेट ट्रिब्यूनल मे अंग्रेजी भाषा की बाध्यता क्यों? अंग्रेजी भाषा मे अपील करने के प्रावधान से हालात यह बनेंगे कि करदाता के पास उपलब्ध साक्ष्य को हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करवाना होगा जो खर्चीला तो होगा ही छोटे शहरों मे अंग्रेजी अनुवादकों की उपलब्धता नहीं होती है जिससे अनुवाद करने मे कर सलाहकारों को बड़े शहरों में जाकर अनुवाद करवाना होगा जो अनावश्यक परेशानी का कारण तो बनेगा ही इससे करदाता के उपर अनावश्यक खर्चे का भार भी बढ़ेगा। इसके अलावा यदि किसी तथ्य को अनुवादक ने सही रूप मे अनुवाद नहीं किया तो इसका खामियाजा आम करदाता को भुगतना होगा, जिससे वह न्याय पाने से वंचित रह सकता है? बड़े आश्चर्य की बात है कि देश की आजादी के 77 वर्षो के बाद भी हमारे देश के ब्यूरोक्रेट्स अंग्रेजी मानसिकता से दूर नहीं हो पा रहे है जबकि भारत सरकार हिन्दी भाषा को प्राथमिकता देकर इसको बढ़ावा देने के लिए सतत् प्रयास कर रही है। बावजूद इसके अपीलेट ट्रिब्यूनल मे अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता सरकार के प्रयासों की मंशा के विपरीत है।

न्यायहित में अंग्रेजी में दस्तावेज प्रस्तुत करने की अनिवार्यता को समाप्त करते हुए हिन्दी में भी अपील प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान किए जाने हेतु संशोधित अधिसूचना जारी की जाना जनहित में होगा।

ट्रैवलॉग चर्चा

ब्रजेश कानूनगो

लेखक साहित्यकार हैं।

अद्वितीय इंजीनियरिंग की मिसाल पनामा नहर

मनुष्य के अदम्य साहस और संघर्ष से जो दुनिया के लोगों ने पाया है उनमें से बहुत सी उपलब्धियां हमें चमत्कृत कर देती हैं। उनमें से एक है मानव निर्मित पनामा नहर और उसका मेकेनिज्म। उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका के मिलन भूभाग को चीरकर नहर बना देना और दुनिया के जलमार्ग परिवहन को सुगम बना देना, सचमुच जानने समझने का विषय है। हमारे बहुत से प्रिय घुमक्कड़ विश्व पर्यटन करते हुए पनामा देश और पनामा नहर की यात्रा कर चुके हैं। परमवीर सिंह (पैसेंजर परमवीर) और नवांकुर चौधरी (डॉक्टर यात्री) के पनामा ट्रैवल वीडियोस हमने देखे। इन वीडियो को देखते हुए इस महत्वपूर्ण नहर को महसूस करने और उसकी प्रक्रिया के प्रति जिज्ञासा जब बहुत बढ़ गई तो संबंधित जानकारी जुटाते हुए चकित होना स्वाभाविक था।

अक्सर मन में विचार आता रहता है कि मानव जाति के हौसलों और इरादों ने जैसे समूचे ब्रह्मांड पर विजय का संकल्प ले लिया हो। क्या कुछ नहीं पा लिया है मनुष्य ने। यहां तक कि जीवों के क्लोन और मनुष्य के कृत्रिम अंगों तक को अपने बलबूते बना लेने के प्रयोग सफल हुए हैं। नदियों को आपस में जोड़ देने और विशाल महाद्वीपों के विशाल भूभाग को खोदकर दो समुद्रों तक को मिला देने में अपनी मेहनत और हुनर से सफलता पाई है। विज्ञान और तकनीक ने इतनी प्रगति कर ली है कि चांद सितारों तक पहुंचने की बात तो अब बिल्कुल अविश्वसनीय नहीं लगती, बल्कि अब तो वहां हम कॉलोनियां बनाने के उपाय सोचने लगे हैं।

मनुष्य के अदम्य साहस और संघर्ष से जो दुनिया के लोगों ने पाया है उनमें से बहुत सी उपलब्धियां हमें चमत्कृत कर देती हैं। उनमें से एक है मानव निर्मित पनामा नहर और उसका मेकेनिज्म।

उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका के मिलन भूभाग को चीरकर नहर बना देना और दुनिया के जलमार्ग परिवहन को सुगम बना देना, सचमुच जानने समझने का विषय है।

हमारे बहुत से प्रिय घुमक्कड़ विश्व पर्यटन करते हुए पनामा देश और पनामा नहर की यात्रा कर चुके हैं। परमवीर सिंह (पैसेंजर परमवीर) और नवांकुर चौधरी (डॉक्टर यात्री) के पनामा ट्रैवल वीडियोस हमने देखे। इन वीडियो को देखते हुए इस महत्वपूर्ण नहर को महसूस करने और उसकी प्रक्रिया के प्रति जिज्ञासा जब बहुत बढ़ गई तो संबंधित जानकारी जुटाते हुए चकित होना स्वाभाविक था।

पनामा नहर दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण जलमार्गों में से एक है, जो अटलांटिक महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ती है। यह नहर पनामा देश में स्थित है और इसका निर्माण 20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुआ था। यद्यपि पनामा नहर से पहले कई प्रमुख जलमार्ग नहरें बनाई गई थीं, जिनमें से प्रमुख हैं, बीजिंग-हांग्जो ग्रैंड कैनाल जो विश्व की सबसे लंबी मानव निर्मित नहर है, जिसकी लंबाई 1,776 किमी है। इसका निर्माण 5वीं सदी ईसा पूर्व में हुआ था और यह चीन में स्थित है। सूएज नहर मिस्र में स्थित एक महत्वपूर्ण नहर है, जो भूमध्य सागर को लाल सागर से जोड़ती है। इसका निर्माण 1869 में पूरा हुआ था। इन नहरों के निर्माण के अनुभवों से निश्चित ही पनामा नहर निर्माण को आगे बढ़ाने का साहस भी मिला होगा हमारे इंजीनियरों को।

पनामा नहर के निर्माण से पहले, पोत परिवहन में कई दिक्कतें आती थीं। अटलांटिक महासागर से प्रशांत महासागर तक जाने के लिए जहाजों को दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी सिरे के चारों ओर जाना पड़ता था, जिसे केप हॉर्न कहा जाता है। यह रास्ता बहुत लंबा और खतरनाक था। इस लंबे रास्ते के कारण, जहाजों को अधिक समय और ईंधन की आवश्यकता होती थी, जिससे परिवहन की लागत बढ़ जाती थी। केप हॉर्न के आसपास का समुद्र बहुत अशांत और खतरनाक था, जिससे जहाजों को दुर्घटना का खतरा रहता था। पनामा नहर बन जाने से अमेरिका के पूर्वी और पश्चिमी तटों के बीच की दूरी इस नहर से होकर गुजरने पर तकरीबन 8000 मील (12,875 किमी) घट जाती है क्योंकि इसके न होने की स्थिति में जलपोतों को दक्षिण अमेरिका के हॉर्न अंतरीप से होकर चक्कर लगाते हुए जाना पड़ता था। पनामा नहर को पार करने में जलयानों को अब 8 घंटे का समय लगता है। नहर के माध्यम से जहाजों की आवाजाही से समय और ईंधन की बचत होती है, जिससे परिवहन की लागत कम हो जाती है। जहाजों की आवाजाही अधिक सुरक्षित हुई है, क्योंकि यह रास्ता खतरनाक समुद्रों की हलचलों से भी बचाता है। इसके साथ ही जहाजों की जल्दी आवाजाही से व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि हुई है, क्योंकि यह माध्यम दुनिया के विभिन्न हिस्सों के बीच कम समय में सीधा संपर्क प्रदान करता है।

दरअसल पनामा नहर का विचार 16वीं शताब्दी में आया था, जब स्पेनिश खोजकर्ताओं ने इस क्षेत्र का अन्वेषण किया था। हालांकि, नहर का निर्माण 1881 में फ्रांस ने शुरू भी किया किंतु परियोजना कई कारणों से असफल हो गई, जिनमें हजारों मजदूरों की मलेरिया जैसी बीमारी से मर जाना प्रमुख था, उस वक्त मच्छरों से होने वाली इस भयानक बीमारी की पहचान और इलाज खोजा नहीं जा सका था। बाद में अमेरिका ने 1904 में इस परियोजना को अपने हाथ में लिया और 1914 में नहर का निर्माण पूरा किया।

पनामा नहर का निर्माण एक जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य था। नहर की लंबाई लगभग 80 किमी है और इसमें तीन जोड़ी तालाब या झीलें हैं जो जहाजों को एक महासागर से दूसरे में जाने में मदद करती हैं। नहर के निर्माण में लगभग 2.7 करोड़ घन मीटर मिट्टी और पत्थर का उत्खनन किया गया था।

पनामा नहर की कार्यप्रणाली में इन्हीं तालाबों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब एक जहाज नहर में प्रवेश करता है, तो उसे तालाबों के जल स्तर को ऊपर नीचे उठाकर एक महासागर से दूसरे में ले जाया जाता है। जहाजों को पूरी तरह नहर प्रबंधन को सौंप दिया जाता है। समूचा प्रबंधन पनामा नहर प्राधिकरण (Panama Canal Authority) द्वारा किया जाता है, जो पनामा सरकार की एक एजेंसी है। यह प्राधिकरण नहर के संचालन, रखरखाव और सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होती है। ये ही नहर पार करवाने में संपूर्ण तकनीकी प्रक्रिया पूरी करते हैं। बड़े जहाजों को जल सतह से हम स्वयं ऊपर नीचे होते देख पाते हैं। समुद्र तल से ऊपर उठाकर फिर उसे दूसरे समुद्र के तल पर पहुंचा दिया जाता है। यह बहुत रोमांचक दृश्य होता है, जिसमें कुछ घंटों का समय लगता है। पनामा नहर स्थल पर एक ऑडिटोरियम में पर्यटकों को इसके इतिहास, निर्माण आदि के बारे में एक फिल्म प्रदर्शन द्वारा जानकारी भी उपलब्ध कराई जाती है।

पनामा नहर का निर्माण 1881 में शुरू हुआ था और 1914 में पूरा हुआ था जिसकी लंबाई 82 किमी, औसत चौड़ाई 90 मीटर और न्यूनतम गहराई 12 मीटर है। जो वर्तमान की स्थितियों में विस्तार की जरूरत महसूस करने लगी है। नहर के विस्तार की परियोजना चल रही है, जिसमें नए लॉक सिस्टम का निर्माण शामिल है ताकि बड़े जहाजों को समाहित किया जा सके। इसी के साथ निकारागुआ में भी एक नई नहर की योजना है, जो प्रशांत महासागर और अटलांटिक महासागर को जोड़ेगी। यह परियोजना अभी निर्माणाधीन है।

इन नहरों का निर्माण और विस्तार वैश्विक समुद्री परिवहन और व्यापार को सुविधाजनक बनाने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इंजीनियरों की मेहनत और उनके ज्ञान विज्ञान और संघर्षों के लिए संसार उनका सदैव कृतज्ञ रहेगा।

किसानों तक गुणवत्तायुक्त बीज और खाद पहुंचाने की कवायद

खाद-बीज की जांच करने कृषि विभाग ने बनाया दल, निजी दुकानों से ले रहे सैंपल

संजय द्विवेदी, बैतूल। खरीफ सीजन के आते ही बाजार में नकली खाद और बीज बेचने वाले भी सक्रिय हो जाते है। इनकी ठगी से किसानों को बचाने के लिए कृषि विभाग ने कोशिश शुरू कर दी है। नकली खाद-बीज की बिक्री करने वाले लोगों पर एक्शन के लिए विभाग ने अभियान शुरू कर दिया है। इसके तहत विकासखंड स्तर पर अधिकारियों द्वारा खाद-बीज की दुकानों का निरीक्षण किया जा रहा है। वहीं जिला स्तर पर भी कृषि विभाग ने दल बनाया है। यह दल खाद-बीज की दुकानों से सैंपल लेकर जांच करायेगी। खाद-बीज अमानक पाये जाने पर नियमानुसार कार्यवाही होगी। दरअसल जून से खरीफ सीजन की शुरुआत हो जाएगी। बोनी के लिए किसानों ने तैयारी शुरू कर दी है। शहर सहित ग्रामीण अंचलों में किसान दुकानों पर खाद, बीज की खरीदारी के लिए पहुंचने लगे हैं। इधर, कृषि विभाग ने अमानक खाद, बीज की बिक्री और कालाबाजारी पर रोक लगाने जांच दल गठित किया है। यह जांच दल निजी दुकानों पर जांच करने के साथ सैंपल भी ले रहा है। यदि सैंपल की जांच रिपोर्ट अमानक आती है तो कंपनियों के लाइसेंस निरस्त करने की कार्रवाई की जा सकती है। खाद-बीज का अवैध भंडारण पाए जाने पर जब्ती के साथ सबंधित पर एफआईआर भी कृषि विभाग करायेगा।

खाद की कमी न हो, इसके लिए भंडारण शुरू – जिले में किसानों को खाद की किल्लत का सामना न करना पड़े, इसके लिए विभाग ने खाद के भंडारण की व्यवस्था शुरू कर दी है। निजी खाद दुकानों के साथ ही सहकारी समितियों को भी खाद का भंडारण कर किसानों को उनकी पर्याप्त मात्रा में खाद देने के निर्देश दिए गए हैं। अधिकारियों के मुताबिक अभी जिले में 43 हजार क्विंटल बीज की व्यवस्था की है। पिछले वर्ष लगभग 42 हजार क्विंटल बीज का उठाव हुआ था। इस वर्ष भी इतने ही बीज की खपत का अनुमान है। किसान अपनी नज़दीकी सोसायटियों में जाकर बीज खरीद सकते है। जिले में यूरिया खाद का भंडारण हो चुका है। बैतूल में 1800 मीट्रिक टन खाद की रैक बैतूल पहुंची। खाद सोसायटियों में भेजा जा रहा है। अधिकारियों का कहना है कि जिले में खाद की कोई कमी नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर और खाद की रैक बुलाई जाएगी।

बाजार में कई कंपनियों के बीज, रिकॉर्ड का मिलान– खरीफ सीजन की शुरुआत के चलते खाद-बीज की दुकानों पर किसान खरीदारी करने पहुंच रहे हैं। ऐसे में बीज को लेकर किसानों में संशय है, क्योंकि कई ब्रांडेड कंपनियों ने बेहतर क्वालिटी का दावा करते हुए बाजार में बीज उतार दिए हैं। पिछले साल भी किसानों ने जो मक्का बीज कृषि विभाग द्वारा बांटा गया था, वह बोवनी के बाद अंकुरण ही नहीं हो सका था। जिसके कारण किसानों की पूरी फसल बर्बाद हो गई थी। इधर खाद की किल्लत रोकने सोसायटी एवं निजी खाद दुकानों पर स्टॉक का मिलान किया जा रहा है। किसानों को पक्का बिल देने के निर्देश दिए हैं। किसी भी रिकॉर्ड में गलती होने पर नोटिस जारी किए जाएंगे।

जैविक खेती के लिए किसानों को कर रहे प्रोत्साहित

कृषि विभाग किसानों को जैविक खेती करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है, ताकि किसानों की आय में वृद्धि हो और कृषि उत्पादन बढ़ सके। कृषि विभाग का कहना है कि जैविक खेती के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके लिए कई कार्यक्रम भी आयोजित किये जा रहे है और राज्य में जैविक खेती को बढावा देने के प्रयास तेज हैं। अधिकारियों का कहना है कि जैविक खेती से कम लागत में किसान अच्छा उत्पादन ले सकते है। जैविक खेती से मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है, जबकि रासायनिक खेती से मिट्टी की उर्वरक शक्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

इनका कहना है –

नकली खाद-बीज की रोकथाम के लिए विकासखंड स्तर पर अधिकारियों द्वारा खाद-बीज दुकानों की जांच कर सेम्पल लिये जा रहे है। जिला स्तर पर भी दल गठित किया है। खाद-बीज के सैंपलों की जांच के बाद यदि रिपोर्ट में खाद-बीज अमानक पाये जाते है तो नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी।

– **आनंद बडोनिया,** डीडीए, कृषि विभाग बैतूल

बैतूल एसडीएम ने अवैध कॉलोनी ग्रीन वैली पर एफआईआर दर्ज करने के दिए आदेश

बैतूल। जिला मुख्यालय के समीपस्थ ग्राम जामठी स्थित अवैध कॉलोनी ग्रीन वैली पर बैतूल एसडीएम द्वारा एफआईआर दर्ज किए जाने के आदेश जारी किए गए हैं। बैतूल एसडीएम द्वारा जारी किए गए आदेश के अनुसार उक्त भूमि पर निर्मित/ विकसित कालोनी को अवैध कॉलोनी का भाग घोषित किया गया है तथा अवैध कॉलोनी का भाग इन्द्राज करने के आदेश दिये गए है। बिना विकास अनुज्ञा एवं बिना ग्राम एवं नगर निवेश की अनुज्ञा/अभिन्यास अनुमोदन कराये बिना कालोनी का निर्माण किए जाने के कारण भूमिस्वामियो संजय कुमार पिता छोटेलाल साहू निवासी भग्गूढाना, पवन पिता नंदू साहू एवं सौरभ पिता बद्रीविशाल शुक्ला के विरुद्ध एफआईआर दर्ज किये जाने के आदेश तहसीलदार बैतूल, (ग्रामीण) को दिये गए है।

सहायक संचालक नगर तथा ग्राम निवेश बैतूल को आदेशित किया गया कि वह उक्त भूमि के संबंध में अभिन्यास अनुमोदित न करे। उक्त प्रश्नाधीन भूमि का भूमि उपयोग, बैतूल विकास योजना 2035 में निर्दिष्ट अनुसार, ख.नं.354 कृषि, नाले किनारे वृक्षारोपण, वर्तमान मार्ग तथा ख.नं 363, कृषि, वर्तमान मार्ग होने से आदेश तत्काल प्रभाव से निरस्त किया गया है। उक्त भूमि के भू-खण्डों के विक्रय पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाई गई है। इसके लिए जिला पंजीयक एवं उप पंजीयक बैतूल को पृथक से पत्र जारी किया जाए। वहीं उक्त भूमि के भूखण्डों की अब तक हुई बिक्री, विक्रय पत्रों के नामांतरण पर तत्काल प्रभाव पर रोक लगाई गई है। भूमि पर अवैध कॉलोनी का भाग के अंदर भूखण्डधारियों के द्वारा धारित भूमि आवासीय प्लॉट की खरीद बिक्री एवं नामांतरण पर भी तत्काल प्रभाव से रोक लगाते हुए भूमि पर किये गये विकास/निर्माण को तत्काल तोड़ने के आदेश दिये गए। इसके अलावा ग्राम पंचायत जामठी को इस आशय का पत्र जारी किया जाए कि उक्त अवैध निर्मित कॉलोनी पर मकान निर्माण की अनुज्ञा प्रदाय न की जाए तथा कोई विधि-विरूद्ध निर्माण कार्य प्रचलित हो, तो उसे तत्काल रोके जाने के आदेश दिए है। तहसीलदार बैतूल ग्रामीण के नेतृत्व में राजस्व अमले ने 27 मई को खसरा नंबर 354/10, 354/79, 363/9 एवं 363/3 (कुल रकबा 2.016 हेक्टेयर) भूमि पर बने गेट, बाउंड्री वॉल, कार्यालय और अन्य निर्माण कार्यों को हटाया।

जिले में पहली बार पुरुषों के हक में आयोजित हुआ एक कुर्सी मर्दों के नाम कार्यक्रम

कार्यक्रम में सामने आए पुरुष प्रताड़ना के दो गंभीर मामले

बैतूल। सेव इंडियन फैमिली (एसआईएफ) बैतूल की टीम ने मंगलवार को आमला में पहली बार पुरुषों के मानसिक उत्पीड़न और सामाजिक उपेक्षा के खिलाफ एक कुर्सी मर्दों के नाम नामक प्रतीकात्मक कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर एसआईएफ बैतूल टीम ने एसडीएम, तहसीलदार और थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपा, जिसमें फर्जी मुकदमों, घरेलू हिंसा में पुरुषों

पर झूठे आरोप, और बढ़ते मानसिक उत्पीड़न की घटनाओं को लेकर चिंता जताई गई। ज्ञापन में यह मांग रखी गई कि ऐसे मामलों की निष्पक्ष जांच हो और पुरुषों के पक्ष को भी समान गंभीरता से सुना जाए। कार्यक्रम में उपस्थित एसआईएफ संस्था के प्रमुख, साइकोलॉजिस्ट, सोशल वर्कर, मेंस राइट्स एक्टिविस्ट डॉ. संदीप गोहे ने कहा कि समाज में पुरुषों की पीड़ा को अक्सर नजरअंदाज किया जाता है, जबकि वे भी झूठे मामलों और सामाजिक दबाव का शिकार होते हैं। उन्होंने कहा कि एसआईएफ का प्रयास है कि हर उस पुरुष को न्याय दिलाया जाए जो किसी भी प्रकार के अन्याय से पीड़ित है। इस अवसर पर एसआईएफ बैतूल टीम के प्रमुख सदस्य रूपेश पवार, विश्वजीत मंडल, हितेश सोनी, बाबूलु बाचले, दिलीप पवार, उदय पाठे और देवी प्रसाद मालवीय उपस्थित थे।

आठनेर ताप्ती घाट पर बढ़ा खतरा, मिट्टी से फिसल रही गाड़ियां, हर दिन बढ़ रही दुर्घटनाएं

विधायक हेमंत खंडेलवाल ने एक साल पहले ही सड़क चौड़ीकरण को लेकर लिखा था पत्र

बैतूल। आठनेर मार्ग स्थित ताप्ती घाट पर हादसों का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। घाट की संकरी सडक़ और हाल ही में किनारे डाली गई मिट्टी हादसों की वजह बन रही है। पानी गिरने के बाद यह मिट्टी गीली होकर और ज्यादा फिसलन पैदा कर रही है। सोमवार सुबह घाट पर दो ट्रैक्टर आपस में टकरा गए। इस दौरान कुछ देर के लिए आवागमन भी ठप हो गया था। वहीं बाइक सवार भी ब्रेक लगाते समय फिसलते दिखे। बैतूल से आठनेर के बीच 34 किमी की दूरी में ताप्ती घाट करीब 4.5 किमी तक फैला है। इस हिस्से में सडक़ बेहद संकरी है, जिससे बड़ी गाडिय़ों को देखते ही छोटी गाडिय़ों को किनारे उतरना पड़ता है। पिछले कुछ समय में यहां कई हादसे हो चुके हैं। इन्हीं को देखते हुए सडक़ के किनारे मिट्टी डालकर अस्थायी चौड़ीकरण की कोशिश की गई, लेकिन बारिश में यह मिट्टी बहकर सडक़ पर आ गई और फिसलन का कारण बन गई। घटनास्थल पर मौजूद मुसाखेड़ी

निवासी विराट बामने ने बताया कि पहले सडक़ किनारे मुरम डाली जाती थी जिससे गाडिय़ों को पकड़ मिलती थी। इस बार सिर्फ मिट्टी डाली गई है, जो बारिश में फिसलन पैदा कर रही है। उन्होंने सडक़ का स्थायी चौड़ीकरण जल्द करवाने की मांग की। बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने ताप्ती घाट की 3.5 मीटर चौड़ी सडक़ को 5.5 मीटर करने का प्रस्ताव एक वर्ष पूर्व ही भेजा था। उन्होंने वन विभाग और मध्यप्रदेश सडक़ विकास निगम को पत्र लिखकर जल्द अनुमति प्रक्रिया शुरू करने की मांग की थी। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए दक्षिण सामान्य वन मंडल अधिकारी विजयनाथन टी.आर. ने 11 जुलाई 2024 को प्रबंध संचालक भोपाल को पत्र भेजा। इसमें उन्होंने सभी आवश्यक दस्तावेजों के साथ पूर्ण प्रस्ताव प्रस्तुत कर निर्माण की अनुमति प्रक्रिया पूरी करने के निर्देश दिए। वन विभाग की ओर से प्रक्रिया आगे बढ़ाई जा चुकी है, लेकिन एमपीआरडीसी भोपाल की ओर से अब तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

इनका कहना है

ताप्ती घाट क्षेत्र के रहवासियों का कहना है कि घाट पर हादसे होते रहते हैं। हर बार अस्थायी उपायों से काम नहीं चलेगा। सडक़ का चौड़ीकरण स्थायी समाधान है, जिसे अब प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि जान-माल का नुकसान रोका जा सके। ताप्ती घाट रोड चौड़ीकरण की अनुमति के लिए एमपीआरडीसी ने अब तक आवेदन नहीं किया है अगर आवेदन आता है तो नियम अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

– **विजयानन्तम टी.आर,** वन मंडल अधिकारी, दक्षिण सामान्य वन मंडल बैतूल

आचार्य श्री विश्व सागर जी महाराज ने अपने संघ के साथ मानतुगगिरी तीर्थ क्षेत्र, भोजशाला का दर्शन किए

धार। आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ससंघ जिसमें 7 मुनिराज,4 माताजी 1 भैयाजी 1 दीदी सम्मिलित हैं का अतिशय तीर्थ क्षेत्र मानतुंगगिरी पर मंगल आगमन हुआ। मानतुंगगिरी की प्रेरक क्षुल्लिका चन्द्रमति माताजी के पावन सानिध्य में संघस्थ दीदी सुप्रभा बहन तथा तीर्थ क्षेत्र प्रबंध समिति के पदाधिकारियों द्वारा संघ की अगवानी की गई। आचार्य संघ द्वारा क्षेत्र का दर्शन कर वहां चल रही विकास की गतिविधियों का अवलोकन किया। क्षेत्र के महत्व को प्रतिपादित करते क्षुल्लिका चन्द्रमति माताजी ने क्षेत्र के विकास के संबंध में संघ को अवगत करवाया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष किशोर जैन द्वारा क्षेत्र का परिचय दिया। क्षेत्र प्रबंध समिति के अध्यक्ष नरेश गंगवाल ने आचार्य श्री को शास्त्र भेंट किए तथा क्षेत्र पर भूगर्भ से प्राप्त अतिशयकारी प्रतिमा जी के संबंध में जानकारी दी।आचार्यश्री ने तीर्थ क्षेत्र के महत्व को बताते हुए तीर्थ क्षेत्र के विकास की गतिविधियों को सराहाते हुए उसके और भी चौमुखी विकास के लिए आशीर्वाद दिया। आचार्य श्री ने अपने संघ के साथ ऐतिहासिक

भोजशाला का भी अवलोकन किया। मीडिया प्रभारी सुभाष जैन ने बताया कि क्षुल्लिका चन्द्रमति माताजी ने क्षेत्र के विकास के संबंध में बताया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष किशोर जैन द्वारा क्षेत्र का परिचय दिया एवं क्षेत्र प्रबंध समिति के नरेश गंगवाल ने ने आचार्य श्री को शास्त्र भेंट किए व क्षेत्र पर भूगर्भ से प्राप्त अतिशयकारी प्रतिमा जी के संबंध में बतलाया। आचार्यश्री ने अपने मंगल प्रवचन में क्षेत्र के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान किया । आचार्य श्री ने भोजशाला को ऐतिहासिक धरोहर बताते हुए हिंदू समाज की एक अभिभूत धरोहर है। समाज अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल , संजय छाबड़ा, संजय दिलावरा, प्रवीण गोधा,अजय जी लुहाड़िया, पुनीत जैन, आशीष बांझल,सतेंद्र जैन, अजय जी बड़जात्या, डॉ आनंद जी जैन , नेहा छाबड़ा,विहार में सम्मिलित समाज की बालिकाओं सहित अनेक समाजजन उपस्थित रहे। सचिव मौसम झांझरी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में आज सारणी में आयोजित होगा स्व सहायता समूहों का सम्मेलन

मुख्यमंत्री आज सारणी में करेंगे 464.55 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन

बैतूल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में आज 28 मई बुधवार को सारणी में एक भव्य स्व सहायता समूहों के सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ.यादव जिले के विकास को नई दिशा देने वाले 464.55 करोड़ रुपये की लागत के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन करेंगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को दोपहर 12.50 बजे हेलीकॉप्टर से भोपाल से सारणी के लिए प्रस्थान करेंगे। दोपहर 1.30 बजे मुख्यमंत्री डॉ. यादव सारणी के बगडोना हेलीपैड पर पहुंचेंगे। इसके बाद यहां से भव्य यात्रा के साथ मुख्यमंत्री डॉ.यादव कार्यक्रम स्थल पर पहुंचेंगे। कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात दोपहर 3.30 बजे मुख्यमंत्री डॉ.यादव बगडोना हेलीपैड से देवास जिले के लिए प्रस्थान करेंगे। स्व सहायता समूहों के सम्मेलन व विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण और भूमि पूजन कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय राज्य मंत्री और बैतूल सांसद दुर्गादास उईके तथा मध्य प्रदेश शासन के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के प्रभारी मंत्री एवं राज्य मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल करेंगे। इस अवसर पर बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे, मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख, घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगा सज्जन सिंह उईके, भैंसदेही विधायक महेंद्र सिंह चौहान, मप्र जन अभियान परिषद उपाध्यक्ष व राज्य मंत्री दर्जा मोहन नागर, जिला योजना समिति सदस्य सुधाकर पवार, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार प्रमुख रूप से उपस्थित होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ.यादव का मिनट टू मिनट कार्यक्रम– मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का बुधवार को सारणी के बगडोना हेलीपैड पर दोपहर 1.30 बजे आगमन होगा। इसके बाद रोड शो स्थल पर आगमन दोपहर 1.35 बजे तथा रोड शो 2.05 बजे तक होगा। सभा स्थल पर आगमन 2 बजकर 10 मिनट पर होगा। इस दौरान स्व सहायता समूह द्वारा लगाए गए स्टॉल एवं प्रदर्शनी का अवलोकन 2.15 बजे तक होगा। मुख्यमंत्री जी का स्टेज पर आगमन एवं दीप प्रज्वल्लन, माल्यार्पण व कन्या पूजन दोपहर 2.15 से 2.20 बजे तक होगा। मंच पर क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों द्वारा स्वागत 2.20 बजे से 2.30 बजे तक होगा। इसके बाद मंचासीन अतिथि गणों का उद्बोधन 2.30 बजे से 2.45 बजे तक होगा। इसके बाद जिले की विकास पुस्तिका का विमोचन एवं जिले द्वारा लखपति दीदी अभियान अंतर्गत किए जा रहे कार्यों पर आधारित लघु वीडियो का प्रदर्शन दोपहर 2.50 बजे तक होगा। जिले की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के स्टार्टअप कंपनियों में 8.5 करोड़ रुपए के निवेश के इंटेंट टू इन्वेस्ट लेटर का प्रस्तुतीकरण दोपहर 2.50 से 2.55 बजे तक होगा। विभिन्न कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि पूजन 2.55 से 3 बजे तक होगा। इसके बाद मुख्यमंत्री डॉ. यादव का उद्बोधन 3 बजे से 3.20 बजे तक होगा। हितलाभ वितरण 3.20 से 3.25 बजे होगा। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत पौधारोपण का प्रारंभ 3.25 से, 3.30 बजे होगा। कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात मुख्यमंत्री डॉ यादव का सारणी के बगडोना हेलीपैड पर आगमन व प्रस्थान 3.30 बजे होगा।

प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल आज आएंगे बैतूल- स्व सहायता समूहों के सम्मेलन, विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमि पूजन कार्यक्रम में होंगे शामिल

बैतूल। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग राज्य मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल आज 28 मई को एक दिवसीय बैतूल प्रवास पर रहेंगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार राज्य मंत्री श्री पटेल बुधवार को प्रातः 9 बजे भोपाल से सारणी जिला बैतूल के लिए प्रस्थान करेंगे। राज्य मंत्री श्री पटेल दोपहर 12 बजे सारणी पहुंचकर मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में आयोजित स्व सहायता समूहों के सम्मेलन, विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमि पूजन कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके पश्चात सायं 4 बजे राज्य मंत्री श्री पटेल सारणी से भोपाल के लिए रवाना होंगे।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में उनकी जीवन गाथा पर आधारित किस्सागोई की अनूठी प्रस्तुति

दास्तानगोई मेंअहिल्या बाई के जीवन के विविध प्रसंगों को बखूबी से प्रस्तुत किया हिमांशु और प्रज्ञा ने

धार। लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में उनकी जीवन गाथा पर आधारित किस्सागोई की अनूठी प्रस्तुति पी.जी. कॉलेज ऑडिटोरियम, धार में भावुकता और गौरव के माहौल में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रोताओं की उपस्थिति रही, जिन्होंने पूरे मनोयोग से लोकमाता के जीवन की प्रेरणादायक गाथा को सुना और सराहा।

प्रसिद्ध दास्तानगो डॉ हिमांशु बाजपेयी और डॉ. प्रज्ञा शर्मा ने अपने प्रभावशाली शब्दों और भावपूर्ण प्रस्तुति से अहिल्याबाई होलकर के जीवन के अनछुए पहलुओं को मंच पर जीवंत कर दिया। उनकी शासन-व्यवस्था, सामाजिक न्याय, धार्मिक सहिष्णुता और जनकल्याण की भावना को दर्शाते किस्सों ने दर्शकों को गहराई से प्रभावित किया। कलाकार हिमांशु और

प्रज्ञा ने अपने घंटे भर के मंचन मे देवी अहिल्या बाई के जीवन के विविध प्रसंगो को शब्दों में एक पूरा चित्र ही सामने रख दिया।

दास्तानगोई पेश करते हुए प्रज्ञा कहती है मराठा नरेश मल्हारराव होलकर ने अहिल्या को अपनी बहू बनाने का मन उसी दिन बना लिया था जब उसे 6 वर्ष की अवस्था में एक मन्दिर में आरती के दौरान देखा था। खांडे राव से विवाह के बाद राज परिवार की बहू बनी अहिल्या बाई ने अपने गुणों से होलकर परिवार का दिल जीत लिया। राज

काज के तरीके सीखे, युद् करने की नीति सीखी, शस्त्र विद्या सीखी, लेकिन दुखो ने अहिल्या बाई का पीछा नहीं छोड़ा। कम उम्र में पति खांडेराव की मृत्यु हो गई। होलकरो की परम्परा के मुताबिक पति के संग पत्नी भी चिता में जलकर सती हो जाती।अहिल्या बाई भी सती के लिए तेयार थी, लेकिन ससुर मल्हारराव होलकर ने ऐसा होने नहीं दिया। वे जानते थे कि अहिल्या बाई राज्य पर आंच नही आने देगी और यह सब सच साबित हुआ।

एक बार तो राधोबा ने चढ़ाई के लिए सेना को तैनात तक कर दिया, लेकिन अहिल्या बाई ने कूटनीति के तहत राधो बा के मंसूबे पर पानी फेर दिया।

दास्तानगोई में मल्हार राव होलकर की मौत, अहिल्या बाई के पुत्र मालेराव की मौत,पुत्री मुक्ताबाई का सती होने की घटना का उल्लेख बड़ी मार्मिक तरीके से किया। इन घटनाओ ने अहिल्या बाई को झकजोरा अवश्य, लेकिन टूटने नही दिया। अपने शासन के दोरान अहिल्या बाई ने बड़ी से बड़ी विपत्ती का सामना किया और विपरीत परिस्थितियों मे भी धेर्य नहीं खोया।

अहिल्या बाई कुशल शासिका होने के साथ शिव भक्त थी । उन्होंने इंदौर सहित महेश्वर, काशी, पूना आदि स्थानों पर कुये, बावड़ी, धर्मशालाये, मन्दिर , किले आदि बनाये। उनके राज्य में कारीगरो, कलाकारों, शिल्पकारों आदि को राज्याश्रय प्राप्त था। वे प्रजापालक थी और कर्मनिष्ठ थी।

कार्यक्रम की शुरुआत में केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर,कलेक्टर प्रियंक मिश्रा सहित अतिथियों ने दीप प्रज्वलन और लोकमाता की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके पश्चात किस्सागोई का सिलसिला प्रारंभ हुआ, जिसमें अहिल्याबाई के जीवन संघर्ष, काशी में मंदिर निर्माण, मालवा में सुव्यवस्थित प्रशासन और उनके सामाजिक सरोकारों की झलक प्रस्तुत की गई।

श्रोताओं ने बार-बार तालियों के साथ अपनी भावनाएं प्रकट कीं। कार्यक्रम के समापन पर आयोजकों ने दोनों वक्ताओं का सम्मान किया और कहा कि इस प्रस्तुति ने लोकमाता के विचारों को आज की पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य सफलतापूर्वक किया है।धारवासियों के लिए यह कार्यक्रम इतिहास और संस्कृति से जुड़ाव का एक सशक्त माध्यम बनकर सामने आया।श्री बाजपेयी ने कहा हमारे द्वारा अहिल्या बाई होलकर के जयंती वर्ष में उनके लोकहितकारी कार्यों को जन जन तक तक तक समूचे प्रदेश में पहुँचाने का कार्य करने का प्रयास किया जा रहा है।राज्यमंत्री श्रीमती ठाकुर, कलेक्टर श्री मिश्रा और पूर्व विधायक करण सिंह पवार ने हिमांशु और प्रज्ञा को स्मृति चिन्ह दिए।

कैबिनेट स्वीकृत पदों पर समय-सीमा में करें भर्ती : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

यूजी पीजी सीट के लिए अधोसंरचना विकास और उपकरण खरीदी कार्य प्राथमिकता से करें पूर्ण

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कैबिनेट द्वारा स्वीकृत पदों पर समय-सीमा में भर्ती प्रक्रिया पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा स्वीकृत पदों की भर्ती में अनावश्यक विलंब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि भर्ती प्रक्रिया की नियमित मॉनिटरिंग की जाए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय भोपाल में स्वास्थ्य विभाग की वृहद समीक्षा की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने यूजी/पीजी सीट्स के अपग्रेडेशन से जुड़े कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि मेडिकल कॉलेजों में सीट वृद्धि के लिए आवश्यक अधोसंरचना विकास कार्यों को समयबद्ध ढंग से पूरा किया जाए। इसके साथ ही आवश्यक उपकरणों की खरीदी

प्रक्रिया को भी निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किया जाए ताकि समयसीमा में राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) के सभी मापदंड पूरे किए जा सकें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि नियमित फॉलो-अप कर कार्यों की स्थिति पर सतत निगरानी रखी जाए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने यह भी निर्देश दिए कि ऑनलाइन ट्रांसफर प्रक्रिया को पारदर्शिता एवं समयबद्धता के साथ क्रियान्वित किया जाए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने हिंदी में एमबीबीएस के लिए आवश्यक पुस्तकों की उपलब्धता मेडिकल कॉलेज में सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिकता से कार्रवाई करने के निर्देश दिए। आयुक्त स्वास्थ्य श्री तरुण राठी सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

षड्यंत्र कर दूसरे के प्लॉट अपना बताकर बेचने वाले आरोपीगण को हुई 3 वर्ष की सजा

भोपाल। एडीपीओ श्रीमती नीरज भार्गव, भोपाल ने बताया कि दिनांक 27/05/2025 माननीय न्यायालय श्री राहुल सिंह यादव न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी महोदय के द्वारा आरोपीगण देवेन्द्र स्वरूप भटनागर एवं अवधेश सिंह सिसौदिया को धारा 420 सहपठित धारा 34 भादवि में दोषसिद्ध पाते हुये आरोपीगण देवेन्द स्वरूप भटनागर एवं अवधेश सिंह सिसौदिया को धारा 420 सहपठित धारा 34 भादवि में 03-03 वर्ष का कठोर सश्रम कारावास एवं 10000-10000 रूपये अर्थदण्ड से दण्डित करने का निर्णय पारित किया है। उक्त प्रकरण में शासन की ओर से सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी श्रीमती नीरज भार्गव द्वारा पैरवी की गई है।

घटना का संक्षिप्त विवरण – दिनांक 09 जून 2012 को पुलिस थाना बागसेविनया मे एक लिखित शिकायती आवेदन प्रस्तुत किया कि फरियादी प्रेम सिंह एवं आर. के. गोयल ने अभियुक्त अवधेश सिंह सिसौदिया एवं देवेन्द्र स्वरूप भटनागर ने गुलाबी नगर, हाउसिंग सोसायटी,प्लॉट क्रं. 23 को उसे दिखाकर स्वयं को मालिक होना बताकर सात लाख रूपए नगद प्राप्त किए और रसीद देने के बाद प्लॉट नं. 22 आवंटित कर दिया। एक माह में रजिस्ट्री करना तय हुआ, परंतु अभियुक्त टालमटोल कर गायब हो गया। बाद में पता चला कि उक्त प्लॉट अभियुक्त अवधेश सिंह सिसौदिया का नहीं है। वहीं आर.के. गोयल ने अभियुक्त देवेन्द्र स्वरूप भटनागर के नहीं है। वहीं आर.के. गोयल ने अभियुक्त देवेन्द्र स्वरूप भटनागर के विरूद्ध एसडीओपी को शिकायती आवेदन दिया कि गुलाबी नगर गृहनिर्माण संस्था का प्लॉट क्रं. 22 साईज 996 वर्गफीट अभियुक्त ने उसे दिखलाया और स्वयं को का प्लॉट क्रं. 22 साईज 996 वर्गफीट अभियुक्त ने उसे दिखलाया और स्वयं को उसका मालिक होना बताया। सात लाख रूपए उससे प्राप्त किये और प्लॉट विक्रय करने का अनुबंध-पत्र कर लिया, परंतु रजिस्ट्री कराने के लिए टालमटोल करता रहा। बाद में पता चला कि अभियुक्त का उक्त सोसायटी में कोई प्लॉट नहीं है। वह कई लोगों के साथ धोखाधड़ी कर चुका है। उक्त घटना की सूचना के आधार पर पुलिस थाना बागसेविनाया मे अप. क्र.- 201/2013 भारतीय दंड संहिता, 1860 की धारा-420 सहपठित धारा 34 का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया सम्पूर्ण विवेचना उपरान्त प्रकरण माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया माननीय न्यायालय के समक्ष अभियोजन द्वारा प्रस्तुत तर्के, साक्ष्य एवं दस्तावेजों के सहमत होते हुये माननीय न्यायालय द्वारा आरोपीगण देवेन्द स्वरूप भटनागर एवं अवधेश सिंह सिसौदिया को धारा 420 सहपठित धारा 34 भादवि में 03-03 वर्ष का कठोर सश्रम कारावास एवं 10000-10000 रूपये अर्थदण्ड से दण्डित करने का निर्णय पारित किया है।

आयुक्त जनसंपर्क ने किया सप्रे संग्रहालय का अवलोकन

भोपाल। डॉ. सुदाम खाड़े, आयुक्त एवं सचिव जनसंपर्क ने 26 मई को ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय की भारतीय स्टेट बैंक की सामाजिक सेवा बैंकिंग के सहयोग से संचालित डिजिटाइजेशन परियोजना की प्रगति का अवलोकन किया। उन्होंने कम्प्यूटर पर अनेक डिजिटाईज पृष्ठों का अध्ययन किया। डा. खाड़े ने इस परियोजना के अगले चरण की तैयारी करने की जरूरत जतलाई जिसमें डिजिटाईज सामग्री को ऑनलाइन करने का सुझाव दिया। उन्होंने सप्रे संग्रहालय की अद्यतन वेबसाइट का भी अवलोकन किया। सप्रे संग्रहालय में 10 के.वी. सौर ऊर्जा पैनल की स्थापना को उन्होंने उपयोगी बताया। विश्व संग्रहालय दिवस पर परियोजना के लोकार्पण समारोह में डा. सुदाम खाड़े प्रवास पर होने के कारण सम्मिलित नहीं हो सके थे। ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय के स्थापना काल से मध्यप्रदेश जनसंपर्क सहयोगी और संबल की

महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस सहकार भावना के प्रति सप्रे संग्रहालय की ओर से मध्यप्रदेश जनसंपर्क के मुखिया होने के नाते डा. सुदाम खाड़े का आभार-सम्मान किया जाना था। 26 मई को बुद्धि के देवता श्रीगणेश की भव्य प्रतिमा और शाल भेंटकर यह दायित्व भी पूर्ण किया गया।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर देशभर में चलेगा विकसित कृषि संकल्प अभियान

पुरी (ओडिशा) से 29 मई से शुरू होगा अभियान, गांवों में जाकर किसानों से संवाद करेंगे वैज्ञानिक

भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण व ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर प्रारंभ हो रहे राष्ट्रव्यापी 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' की तैयारियां पूरी हो गई हैं। 29 मई को पुरी (ओडिशा) की पावन-पवित्र धरा से इस अभियान की शुरूआत की जाएगी, जहां केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह भी शामिल होंगे। 15 दिनों तक चलने वाले इस वृहद अभियान के दौरान श्री चौहान लगभग 20 राज्यों में प्रवास करेंगे और किसानों व वैज्ञानिकों का उत्साहवर्धन करने के साथ ही उनसे सीधा संवाद करेंगे।

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान 29 मई को ओडिशा के बाद 12 जून तक के अभियान के दौरान जम्मू, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड, असम, मेघालय, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली और छत्तीसगढ़ में किसानों व वैज्ञानिक टीमों के साथ संवाद में सहभागिता करेंगे।

इस अभियान के उद्देश्यों में; क्षेत्र विशेष के लिए खरीफ मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों से संबंधित आधुनिक तकनीकों के बारे में किसानों को जागरूक करना, किसानों के लिए उपयोगी सरकारी योजनाओं-नीतियों के बारे में जागरूक करना, किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड में सुझाई गई विभिन्न फसलों के चयन तथा संतुलित खादों के प्रयोग के लिए जागरूक एवं शिक्षित करना व किसानों से फीडबैक प्राप्त करना ताकि उनके द्वारा किए गए नवाचार के बारे में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर अनुसंधान की दिशा का निर्धारण किया जा सके, शामिल है।

खरीफ सीजन में किसानों को सीधा लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से देशव्यापी 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से 29 मई से 12 जून तक 700 से अधिक जिलों में आयोजित किया जाएगा। इस दौरान वैज्ञानिकों की टीम गांवों में जाकर किसानों से संवाद करेगी। अभियान में देशभर के सभी 731 कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके), आईसीएआर के सभी 113 संस्थानों, राज्यस्तरीय विभागों एवं कृषि, बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन के अधिकारियों-कर्मचारियों के साथ ही प्रगतिशील किसान व कृषि से जुड़े अन्य लोग शामिल होंगे।

अभियान का लक्ष्य विभिन्न राज्यों में लगभग डेढ़ करोड़ किसानों तक प्रत्यक्ष रूप से पहुंचना व सीधे संवाद करना है, साथ ही प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के लैब टू लैंड के विजन को धरातल पर उतारना है। केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का कहना है- यह अभियान, विकसित कृषि के साथ-साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत-2047 के संकल्प को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

रिमोट सेंसिंग के पितृ पुरुष, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक डॉ. के. एस. मिश्रा के निधन से वैज्ञानिक जगत में शोक

भोपाल। मध्यप्रदेश रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर (मेपकास्ट) के संस्थापक एवं जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के वरिष्ठ डिप्टी डायरेक्टर जनरल डॉ. के. एस. मिश्रा का कल दिनांक 26-05-2025 को 81 वर्ष की आयु में पुणे में निधन हो गया है। डॉ. मिश्रा द्वारा भारतीय रिमोट सेंसिंग तकनीक में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा मध्यप्रदेश में रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर के संस्थापक प्रभारी रहे, उनके मार्गदर्शन में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की अनेक परियोजनाओं को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। डॉ. मिश्रा, कैनेडियन सरकार लेबोरेट्री विजिटिंग फेलो कनाडा सेंटर फॉर रिमोट सेंसिंग ओटावा में रडार सेट प्रोजेक्ट में अनेक वर्षों तक कार्यरत रहें, उन्होंने कनाडा में स्ट्रक्चरल जियोफिजिक्स, नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेंट एवं रिमोट सेंसिंग आदि के क्षेत्र में भी कनाडा सरकार को महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. के. एस. मिश्रा ने 1983 में मैनिटोबा विश्वविद्यालय, कनाडा से रिमोट सेंसिंग उपयोग में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ. मिश्रा भारत सरकार के तेल एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय में कन्सल्टेन्ट के पद पर कार्यरत रहे। कुछ समय पूर्व तक वे

देहरादून में यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एण्ड एनर्जी में डिस्टिंविशट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत थे।

रिमोट सेंसिंग सेंटर में मध्य प्रदेश के भूमि उपयोग मानचित्रकरण, वेस्ट लेण्ड मानचित्रण, भूजल संभावित क्षेत्रों का मानचित्रण आदि परियोजनाओं का कार्य आपके मार्गदर्शन में सम्पन्न किया गया।

डॉ. के. एस. मिश्रा के निधन पर मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के वैज्ञानिकों डॉ. अनिल कोठारी, महानिदेशक, डॉ. विवेक कटारे, कार्यकारी संचालक, डॉ. प्रवीण कुमार दिघरी, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख प्रशासन, श्री तस्लीम हबीब, सलाहकार, डॉ. अनिल खरे, श्री पराग भल्ला, सलाहकार एवं समस्त वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. जी. डी. बैरागी, श्री डी. के. सोनी, डॉ. कपिल खरे, डॉ. रवि भारद्वाज, डॉ. आलोक चौधरी, श्री निरंजन शर्मा, श्री हरि नटराजन, श्री एस. ए. रजा तथा डॉ. राजेश शर्मा, डॉ. आर. के. सिंह, डॉ. मनीषा ज्योतिषी, डॉ. सरोज बोकिल, डॉ. जे. पी. शुक्ला, डॉ. एन. के. तिवारी, श्री मुकेश साहू, श्रीमती किरण कानूनगो, श्रीमती मधुमिता तिवारी आदि ने अपनी शोक संवेदनाएं प्रेषित की हैं।

एम्स भोपाल में सफलतापूर्वक संपन्न हुई यूवाइटिस मीट 2025

मध्य भारत में पहली बार दुर्लभ नेत्र रोगों पर विशिष्ट सम्मेलन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में नेत्र रोग विभाग द्वारा 'यूवाइटिस मीट 2025' का सफल आयोजन किया गया। यह सम्मेलन नेत्रों में सूजन (यूवाइटिस) जैसे जटिल रोगों पर केंद्रित मध्य भारत का एक विशिष्ट सुपर-स्पेशलिटी शैक्षणिक आयोजन रहा, जिसमें देशभर से आए 125 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस

शैक्षणिक सम्मेलन में देश के प्रतिष्ठित संस्थानों से आए छह आमंत्रित विशेषज्ञों ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। मुख्य वक्ताओं में डॉ. पद्ममालिनी महेन्द्रदास (नारायण नेत्रालय, बेंगलुरु), डॉ. पार्थप्रतिम दत्ता मजूमदार (शंकर नेत्रालय, चेन्नई), डॉ. आलोक सेन (सदुरु नेत्र चिकित्सालय, चित्रकूट), डॉ. धैवत शाह (चोइथराम नेत्रालय, इंदौर) तथा डॉ. अनामिका द्विवेदी (एसएस मेडिकल कॉलेज, रीवा) प्रमुख रूप से शामिल रहे। इनके व्याख्यानों के माध्यम से यूवाइटिस के निदान एवं उपचार के नवीनतम पहलुओं पर गहन एवं उपयोगी चर्चा हुई।

यूवाइटिस मीट 2025 के आयोजन सचिव डॉ. समेन्द्र कारखुर ने जानकारी दी कि यह सम्मेलन मध्य भारत में अपनी तरह का पहला आयोजन है, जिसमें विशेषज्ञों ने देश के विभिन्न हिस्सों से आकर भाग लिया। उन्होंने यह भी बताया कि एम्स भोपाल का नेत्र रोग विभाग यूवाइटिस जैसे जटिल रोगों के निदान एवं उपचार हेतु सभी आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित है। कार्यक्रम के दौरान एक प्रतिस्पर्धात्मक केस प्रजेंटेशन एवं रोचक ऑडियंस क्विज का भी आयोजन किया गया, जिसमें पीजी विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। एम्स भोपाल की द्वितीय वर्ष की पीजी छात्रा डॉ. एस्थर ने केस प्रजेंटेशन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में भोपाल के विभिन्न संस्थानों से कुल 15 पीजी विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। यह आयोजन विशेष रूप से डॉ. सरोज गुप्ता, डॉ. प्रीति सिंह, डॉ. विद्या वर्मा एवं डॉ. समेन्द्र कारखुर के सहयोग से संपन्न हुआ।

दुबई की इंटरनेशनल मॉडल विद्या जोशी शिरकत करेंगी जन परिषद समारोह में

भोपाल। बी यूनिक इंटरनेशनल मिसेज दुबई, मोस्ट पॉपुलर फेसऑफ आबू धाबी, लोकप्रिय रनवे मॉडल एवं एक्ट्रेस सुश्री विद्या जोशी पटेल, अग्रणी संस्था जन परिषद के 36 वें वार्षिक समारोह में शिरकत करने के लिए बतौर विशिष्ट अतिथि आगामी 13 जून को दुबई से

भोपाल आयेंगी । समारोह में राज्यपाल, विधान सभा अध्यक्ष, मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर, गोपाल भार्गव, संजय पाठक, प्रह्लाद पटेल, एंदेल सिंह कंसाना एवं हेमंत खंडेलवाल जी को भी आमंत्रित किया है ।

जानकारी देते हुए संस्था के अध्यक्ष एवं पूर्व डीजीपी श्री एन के त्रिपाठी एवं महासचिव श्री अजय श्रीवास्तव नीलू ने बताया कि जून में जनपरिषद की रचनात्मक यात्रा के 36 वर्ष पूरे हो रहे हैं। परंपरानुसार यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। जिसमें जन परिषद के 275 चैप्टर्स के प्रतिनिधिगण एवं गणमान्य नागरिक शामिल होते हैं । देश प्रदेश के उपलब्धि प्राप्त व्यक्तियों को सम्मानित भी किया जाता है। संयोजक श्री रामजी श्रीवास्तव के अनुसार जन परिषद एवं इसके विभिन्न चैप्टर्स पिछले 36 वर्षों में 1300 से अधिक लोगों को सम्मानित कर चुके हैं । संयोजक रामजी श्रीवास्तव के अनुसार जन परिषद गैरराजनीतिक संस्था है।

निजी कंपनी के सेल्स मैनेजर ने की आत्महत्या

बैतूल। बैतूल के भगूढाना स्थित विनोबा वार्ड में एक निजी कंपनी के सेल्स मैनेजर ने मंगलवार को अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक की पहचान शिवम कोडले के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार, घटना का पता तब चला जब कंपनी के ब्रांच मैनेजर ने शिवम को फोन किया और उसने कॉल रिसीव नहीं की। इसके बाद परिजनों से संपर्क करने का प्रयास किया गया, लेकिन वे अन्य गांव गए हुए थे। चिंतित होकर मैनेजर ने शिवम के एक दोस्त को घर जाकर देखने के लिए कहा।

कार की टक्कर से युवक की मौत

बैतूल। बैतूल के अमरावती स्टेट हाईवे पर सडक़ हादसे में 19 वर्षीय युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान मासोद निवासी अक्षय पिता चंदन के रूप में हुई है। घटना सोमवार रात की है। अक्षय भैंसदेही की ओर जा रहा था। इसी दौरान खेड़ी के काशी तालाब के पास एक अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दी। एक राहगीर ने मृतक के टूटे मोबाइल से सिम निकालकर उसमें दर्ज नंबर पर कॉल किया। अक्षय को गंभीर हालत में जिला अस्पताल लाया गया। डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वह अपने मामा देवराज के गांव भोगीटेड़ा में रहकर मजदूरी का काम करता था। देवराज ऋस्य निर्माण कंपनी में काम करते हैं। मृतक अपने पिता की तीन बेटियों में इकलौता पुत्र था। अस्पताल पुलिस चौकी ने मंगलवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस अज्ञात वाहन की तलाश कर रही है।

नर्मदा पथ सर्वेक्षण यात्रा पहुंची भटगांव, किया श्रमदान, जल बचाने का दिया संदेश

सुबह सवेरे सोहागपुर। आज नर्मदा पथ सर्वेक्षण यात्रा के दूसरे दिन दिवस नर्मदा नदी के ग्राम भटगांव में प्रवेश किया। इस यात्रा में मप्र जन अभियान परिषद सोहागपुर एवं नर्मदा पथ सर्वेक्षण यात्रा में जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक पवन सहगल, विकास खंड समन्वयक किशोर कड़ोले गजेंद्र ठाकुर, सहिल तिलोटिया, शुभम् संकेत आदि का ग्राम भटगांव

सरपंच सुधीर ठाकुर , मदन अहिरवार आदि ग्रामवासियों ने किया । इसी अवसर पर जनपद सीईओ संजय अग्रवाल तहसीलदार रंजीत चौहान का भी ग्रामीणों ने स्वागत किया। इसके उपरांत ग्राम भटगांव का भ्रमण किया गया। इस अवसर ग्रामीणों ने बताया कि ग्राम में बड़े स्तर कटाव हो रहे हैं। नर्मदा पथ सर्वेक्षण यात्रा एवं जन अभियान परिषद सहित समस्त उपस्थित अधिकारियों ने ग्राम में श्रमदान किया। वहीं ग्राम में तालाब के गहरीकरण किया गया। जिसकी मिट्टी निकाल टेक्टर ट्राली के माध्यम से ग्राम के खेतों में पहुंचाई गई। इसके उपरांत ग्राम चौपाल के माध्यम से जिला समन्वयक पवन सहगल ने नर्मदा पथ सर्वेक्षण की विस्तार से सारगर्भित जानकारी दी गई। जनपद सीईओ संजय अग्रवाल ने जल गंगा संवर्धन के अंतर्गत पानी बचाओं की जानकारी दी। ताजा पानी बासी पानी में जो भ्रम हमारे मन में बैठा उसे विस्तार से समझाया। इसी क्रम में समीपवर्ती ग्राम सांकला में भी चौपाल का आयोजन किया गया।। ग्राम गुरमखेडी के प्रमुख समाजसेवी दयाराम पवार ने कहा कि प्रतिदिन मां नर्मदा की आरती प्रतिदिन की जाए। सोहागपुर के समाजसेवी विशाल गोलानी ने बताया कि परिक्रमावासियों के लिए वर्ष में एक माह में चतुर मास में परिक्रमा रूकते हैं। इसलिए उनके रूकने की व्यवस्था भी की जाए।। इस यात्रा में नवांकुर संस्था निर्मल विकास सेवा समिति, मित्र संघ कला मंडल, नवरंग युवा मंडल ज्ञान सरोवर वेलफेयर सोसायटी आदि के संदेश मिश्रा, कमल किरार, साहिल तिलोटिया मेंटर गजेंद्र ठाकुर, सचिन विश्वकर्मा, मंजु पंवार, निशा चौरसिया छात्र शुभम् संकेत , हरिदास अहिरवार, मदन अहिरवार, बंशीता भावसार, भूमिका ढोहरे, नीरज, हरिओम नापित, अंजलि मस्कोले, नेहा चौरसिया, सीमा चौरसिया, शिविका साहू, नितिन चौरसिया आदि उपस्थित थे।

विश्व आपातकालीन चिकित्सा दिवस पर एम्स भोपाल का रैपिडो कैप्टेन्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, विश्व आपातकालीन चिकित्सा दिवस के अवसर पर ट्रॉमा एवं इमरजेंसी मेडिसिन विभाग द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस वर्ष की थीम प्राउड टू प्रोवाइड योर इमर्जेंसी केयर के अनुरूप आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य भोपाल शहर के लगभग 50 रैपिडो कैप्टेन्स (रेंटल बाइक राइडर्स) को प्राथमिक चिकित्सा एवं कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन की जीवन रक्षक तकनीकों से लैस करना था। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक सत्रों के माध्यम से आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित एवं प्रभावी सहायता प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। इंटरएक्टिव डेमो एवं अभ्यास सत्रों ने रैपिडो कैप्टेन्स को सड़क दुर्घटनाओं एवं अन्य आपात स्थितियों में आवश्यक प्रतिक्रिया देने हेतु तैयार किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का

आयोजन ट्रॉमा एवं इमरजेंसी मेडिसिन विभागाध्यक्ष डॉ. युनुस के देख-रेख में किया गया, जबकि प्रशिक्षण का संचालन विभाग के चिकित्सक डॉ. भूपेश्वरी पटेल, डॉ. रश्मि वर्मा एवं अन्य विशेषज्ञों ने किया।

इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, आपातकालीन चिकित्सा केवल अस्पतालों तक सीमित नहीं रहती। रैपिडो कैप्टेन्स जैसे आम नागरिक जो सड़क पर अधिक समय व्यतीत करते हैं, वे जीवन रक्षक सहायता प्रदान कर सकते हैं। इस पहल के माध्यम से हमने एक सक्षम और ज़िम्मेदार नागरिक समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाए हैं। एम्स भोपाल को इस प्रकार की सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने पर गर्व है।

नर्मदा नदी में डूबे तीन युवक

दोस्तों को बचाने में गई एक की जान, अमावस्या स्नान के दौरान हादसा

हरदा (नप्र)। हरदा में अमावस्या पर नर्मदा स्नान करने गए तीन युवक पानी में डूब गए। होमगार्ड की टीम ने उनके शव बाहर निकाले। पोस्टमॉर्टम के लिए टिमरनी भेजे। हादसा मंगलवार सुबह साढ़े 11 बजे लछौरा गांव में हुआ।

करताना चौकी प्रभारी अनिल गुर्जर ने बताया- देवेंद्र उर्फ देवू जाट (23), करण सिरोही (20) और मोहित जाट नदी में नहाने उतरे थे। तैरते-तैरते वे उस तरफ चले गए, जहां गहराई ज्यादा थी। उन्हें डूबते देखकर घाट पर मौजूद रामदास (38) ने नदी में छलांग लगा दी। मोहित को बाहर निकाल लिया। लेकिन जब देवेंद्र और करण को बचाने दोबारा नदी में कूदा तो खुद भी डूब गया।

देवेंद्र जाट (23) | करण सिरोही (20) | रामदास सेजकर (38)

सुबह 8 बजे घर से निकले थे

देवेंद्र जाट डगमानीमा गांव का रहने वाला था। उसके दो छोटे भाई हैं। देवेंद्र की दो साल पहले शादी हो चुकी है, उसका 7 महीने का बेटा है। देवेंद्र किसान था।

करण सिरोही ग्राम भुन्नास का रहने वाला था। वह दो भाइयों में सबसे छोटा था। शादी नहीं हुई थी। करण खेती करता था। रामदास लहारपुर निवासी था। उसके दो बेटे और एक बेटी है। रामदास मजदूरी करता था।

एक की जान बचाकर डूबा रामदास

करताना चौकी प्रभारी अनिल गुर्जर ने बताया कि घटना घाट से लगभग 700 मीटर दूर हुई। तीन युवकों को डूबता देख उन्हें बचाने के लिए चौथा युवक रामदास भी नदी में कूद पड़ा। उसने एक युवक मोहित जाट निवासी डगवानीमा को बचा लिया। लेकिन दो युवकों को बचाने के दौरान तेज बहाव में आने से खुद भी डूब गया।

मोहित के चिल्लाने पर अन्य लोग मौके पर पहुंचे। लेकिन तब तक तीनों डूब चुके थे। जिसके बाद होमगार्ड और पुलिस के जवानों ने तीनों के शवों को नदी से बाहर निकाला। पंचनामा की कार्रवाई के बाद शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवाया गया है। पीएम के बाद शवों को परिजनों को सौंप दिया गया है।

शोर सुनकर नदी में कूदा था रामदास

मृतक रामदास के दोस्त रामनारायण बंजारा ने बताया, हमने स्नान कर लिया था। करीब 11 बजे के आसपास कुछ युवक नर्मदा में नहा रहे थे। इस दौरान अचानक तेज बहाव में जाने लगे। हमारा साथी रामदास घाट पर पूजा कर रहा था। वह युवकों के चिल्लाने की आवाज सुनकर नदी में कूद पड़ा। उसने एक युवक को पानी से निकालकर बाहर फेंक दिया। जब दूसरी बार दो युवकों को बचाने गया तो वह भी डूब गया।

भोपाल में तेज हवा के साथ जोरदार बारिश

छिंदवाड़ा-बैतूल में भी गिरा पानी, शुजालपुर में आंधी से बेकाबू यात्री बस पलट गई

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में आंधी-बारिश का दौर जारी है। मंगलवार को भोपाल-इंदौर-उज्जैन समेत कई जिलों में बारिश हो रही है। कुछ जगह तो आंधी की रफ्तार 30 से 50 किमी प्रतिघंटा तक है। भोपाल में शाम 4 बजे से बूंदाबांदी शुरू हुई। थोड़ी देर बार कई इलाकों में बारिश तेज हो गई।

कई इलाकों में आंधी के साथ बिजली भी चमक रही है। सड़क पर आवाजाही कर रहे लोगों को वाहनों को लाइट जलाकर चलना पड़ रहा है। देवास में सुबह से कभी तेज तो कभी रिमझिम बारिश हो रही है। बैतूल के मुलताई, छिंदवाड़ा और राजगढ़ के ब्यावरा में तेज आंधी के साथ बारिश हुई। इससे पहले सोमवार को इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन, रतलाम, आगर-मालवा समेत प्रदेश के कई जिलों में बारिश हुई। वहीं, रात में 20 से ज्यादा जिलों में मौसम बदला रहा।

शुजालपुर में तेज हवा से पलटी बस, 5 घायल

शुजालपुर-पचोर नेशनल हाईवे पर चित्तौड़ा गांव के पास एक बस पलट गई। रुहेला ट्रेवल्स की बस कुरावर से शुजालपुर रूट पर तलेन होकर जा रही थी। मंगलवार दोपहर करीब साढ़े तीन बजे अचानक तेज हवा के साथ बारिश शुरू हो गई। हवा की वजह से बस बेकाबू हुई और पलट गई।

हादसे में करीब 5 यात्रियों को चोटें आई हैं। बस में कुल 15 यात्री सवार थे। घायलों में से एक जामनेर निवासी नियामत बी को सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

विधायक शर्मा बोले-

हर हाल में रोकना चाहिए लव और लैंड जिहाद, जो लोग इसमें शामिल हैं, उन्हें ठोका जाए

भोपाल (नप्र)। भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा कि लव जिहाद धर्म का कट्टरपंथी स्वरूप है, जिसे अब हर हाल में रोका जाना चाहिए। जो लोग इसमें शामिल हैं, उन्हें ठोका जाए, जूते मारे जाएं और जेल भेजा जाए।

उन्होंने कहा, मुसलमानों को जब कोई तिलक लगा देता है या रक्षा सूत्र बांध देता है तो उन्हें लगता है इस्लाम खतरे में है। लेकिन, यही लोग हिंदू बहन-बेटियों को फंसाने के लिए खुद को तिलक लगा लेते हैं। नाम बदल लेते हैं और मंदिर तक ले जाते हैं।

जब बेटियां उनके जाल में फंस जाती हैं, तब उनका वीडियो बनाकर जगह-जगह परोसते हैं। कुछ मामलों में तो बेटियों की हत्या कर उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए हैं।

इन पापियों को सजा दिलाने हिंदू समाज आगे आए

विधायक ने कहा- इन पापियों, दुष्टों और आतंकियों को 'जैसे को तैसा' की तर्ज पर सजा दी जानी चाहिए। रेस्ट हाउसों पर कार्रवाई हो, इनकी गाड़ियां जब्त हों, फंडिंग के स्रोतों की जांच हो और जो भी इस साजिश में शामिल हों, उन्हें जूतों से मारा जाए। इंदौर की एक घटना का जिक्र करते हुए शर्मा ने कहा कि वहां शूटर का इलाज कर एक उदाहरण पेश किया है।

पूछा-ये शिक्षा किस धर्मग्रंथ में दी गई

रामेश्वर शर्मा इससे पहले धर्म ग्रंथ पर भी सवाल उठा चुके हैं। उन्होंने कहा- अगर आरोपी ने यह कबूल किया है कि इस्लाम के अनुसार हिंदू बहन-बेटियों के साथ बलात्कार करना शबाब का काम है, तो मैं पूछना चाहता हूं कि ये शिक्षा कौन से धर्मग्रंथ में दी गई है? उस ग्रंथ को जब्त किया जाए।

शर्मा ने भोपाल पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखकर मांग की है कि ऐसे धर्मग्रंथों की जब्ती की जाए, और उन मौलवियों पर भी कार्रवाई हो, जिन्होंने इस तरह की आपराधिक प्रेरणा दी हो।

पहले चोरी पकड़ेंगे फिर पुरस्कार पाएंगे कर्मचारी

बिजली चोरी पकड़वाने पर कम्पनी आउटसोर्स व नियमित कर्मचारियों को देगी पुरस्कार

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के भोपाल, नर्मदापुरम, ग्वालियर संभाग के जिलों में बिजली चोरी पकड़ने के लिए मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी ने अब कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने का फैसला किया है। कम्पनी ने कहा है कि बिजली चोरी पकड़वाने वाले कम्पनी के आउटसोर्स, संविदा और नियमित अधिकारियों, कर्मचारियों को कम्पनी द्वारा चोरी का मामला सही पाए जाने पर चोरी की गई बिजली की बिलिंग की दस प्रतिशत प्रोत्साहन राशि दी जाएगी।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा बिजली चोरी की रोकथाम के लिए चलाई जा रही पारितोषिक योजना में यह व्यवस्था की गई है। कम्पनी ने कहा है कि बिजली के अवैध उपयोग की सूचना देने पर सूचना

देने वालों को 10 प्रतिशत प्रोत्साहन राशि दी जा रही है। इस राशि में से पांच प्रतिशत राशि का भुगतान संबंधित सूचना देने वालों को सूचना सही पाए जाने पर जारी किए गए अंतिम रूप से तय किए गए बिजली चोरी के आदेश के तुरंत बाद किया जाएगा तथा शेष पांच प्रतिशत राशि पूर्ण वसूली के बाद दी जाएगी।

ऑनलाइन दे सकेंगे सूचना, गोपनीय रहेगी

कंपनी ने कहा है कि बिजली चोरी की सूचना देने वालों में कम्पनी के नियमित कर्मचारी, संविदा कर्मचारी, आउटसोर्स कर्मचारी भी हो सकते हैं। सूचना सही पाए जाने पर जांच में मिली अनियमितता के विरुद्ध भुगतान के लिए जारी किए गए बिल की पूर्ण वसूली के बाद क्षतिपूर्ति राशि का एक प्रतिशत सूचना देने वाले को मिलेगा। कंपनी ने सूचना प्रक्रिया के बारे में बताया कि अब पारितोषिक योजना की पूरी जानकारी जैसे बिलिंग और भुगतान से संबंधित गतिविधियों को ऑनलाइन कर दिया गया है।

सूचना देने वाले को यह जानकारी देनी होगी

- अब सूचना देने वाले को कंपनी के पोर्टल पर गुप्त रूप से दिए गए प्रारूप में अपना बैंक खाता, पहचान क्र. (आधार या पेन नम्बर) देना अनिवार्य कर दिया गया है।
- सूचना देने वाले के संबंध में जानकारी गोपनीय रखते हुए कंपनी मुख्यालय से प्रोत्साहन की राशि सीधे संबंधित सूचना देने वाले के बैंक के खाते में ट्रांसफर की जाती है।
- कंपनी द्वारा योजना में सूचना देने वाले को तय शर्तों के अधीन पारितोषिक देने का प्रावधान है। इस राशि की अधिकतम सीमा नहीं है।